

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 अंक - 6

जून -II-2021



(पाक्षिक)

माउण्ट आबू

Rs. 8.50

विश्व कल्याणमयी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती



योगियों में वे सर्व महान् थीं। धर्म-दर्शन-मजहब और ईमान थीं। वह दिव्यगुणों की खान थीं। वह मदर-ए-जहान थीं। वह न होतीं तो कुछ भी न होता। वही तो प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा परमात्मा शिव का ईश्वरीय ज्ञान सुनकर सभी यज्ञ-वत्सों को समझाती थीं। जो कोई भी उनके सानिध्य में आया उनके मुख से 'माँ ओ माँ', जगत अम्बा माँ बोल स्वतः ही निकल जाते। ऐसी विश्व कल्याणमयी, महावरदायिनी को उनके स्मृति दिवस पर शत-शत नमन...

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के पश्चात् जगदम्बा सरस्वती का स्थान तो अपनी रीति से सर्व महान् है। यज्ञ की स्थापना में उनकी शिरोमणि पवित्रता, घोर तपस्या, अटूट निश्चय इत्यादि की तो जितनी महिमा की जाये उतनी ही कम है। जिन्होंने उनके मुख-मंडल को देखा है, उनसे पूछिये कि वे कुदरत की क्या कमाल थीं! उनको देख कर तो महा अज्ञानी भी कह उठता था।

“माँ, ओ माँ! तेरी ठण्डी छाँ! तेरी शीतल बाँ! तेरी हँ में हँ, ओ माँ! तू ले जा चाहे जहाँ, हमें दिखता आसमाँ, भूल गया जहाँ! माँ ओ माँ! ...”

कैसी थी वो भीनी-भीनी मुस्कुराहट जो शिव और ब्रह्मा ने ज्ञान-रंग से चित्रांकित की हो! उस मुस्कुराहट को देख कर तो रोना सदा के लिए बन्द हो जाता। वे निर्मल नैन जिनसे योग-तपस्या की प्रकाश-रश्मियाँ जिस पर पड़ती, उसे भी योग के पंख लगाकर फर्श से अर्श पर ले जातीं। उनका वह दिव्य व्यक्तित्व ही ऐसा था कि वे एक अहिंसक सेना की सेनापति दिखायी देती थीं। उनकी चाल-ढाल ही ऐसी थी कि जिसमें 'योग' और 'राज' मिलकर उसे इतना भव्य, दिव्य, सु-सभ्य बनाते थे कि बात मत पूछिये। जिस किसी को भी उनका स्पर्श मिला, उसने अनुभव किया कि उसकी इन्द्रिय चंचलता शान्त हो चली। जिस समय किसी ने उनके कमरे में प्रवेश किया तो देखा कि वे समाधिस्थ हैं, तपस्यारत हैं अथवा हंस-माता के रूप में ज्ञान-रत्नों को धारण किये हैं। क्या जादू था उनकी तस्वीर में! क्या सुगन्धि थी उनके व्यवहार में! कैसी महक थी उनके कर्मों में! जिसने उन्हें परिचययुक्त दृष्टि से देखा, उसका तो जीवन ही सफल हो गया। अतः हम सभी का कैसा सौभाग्य है कि हम ब्रह्माकुमार या ब्रह्मा-वत्स भी हैं और सरस्वती-पुत्र अथवा सरस्वती-पुत्री भी हैं। लोग जिस देवी को विद्यादायिनी के रूप में विद्या का वरदान पाने के लिए पुकारते हैं, स्वयं उन्हीं के पुनीत हाथों से हमने अमृत पीया, स्वयं उनकी मुख-वीणा से ज्ञान की स्वर्ण-सुखदायिनी झंकार सुनी। उनके वरद हाथों ने हमारे सिर पर प्यार बरसाया। उनकी ज्ञानमयी गोद के हम सुत हैं। हमारे इन नेत्रों ने सरस्वती को इस धरा पर खड़े, बैठे, चलते देखा। हमने यदि और कुछ भी न पाया, क्या यह कम बात है? संसार में इससे अधिक सुन्दर दृश्य और कोई हो सकता है क्या?

जमीन-आसमान सूक्ष्म दिव्य नाद करते थे, जब वे चलती थीं। चंदा भी देर से जाता था जब वह रात-रात भर शिव पिता को याद करती थीं। अरे,

जिसने उन्हें साक्षात् नहीं देखा, उसने क्या देखा? जिसे संसार आदि देवी, अम्बे मैय्या, ईव, हव्वा इत्यादि नाम से याद करता है, उन्हें देखने का



वे ही पार्वती थीं जिसने पर्वत पर तपस्या की, शिव के लिए। गौरी वे ही तो थीं। हिमराज की वह पुत्री ज्ञान-गुण की दृष्टि से अपार सुन्दर थीं।

यही तो मौका था। हम उनके संग-संग रहे, उनके हाथों से पले, उनकी छत्रछाया में खेले। वो दिन कितने निराले थे! योगियों में वे सर्व महान् थीं।

धर्म-दर्शन-मजहब और ईमान थीं। वह दिव्यगुणों की खान थीं। वह मदर-ए-जहान थीं। वह न होतीं तो कुछ भी न होता। वही तो प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा परमात्मा शिव का ईश्वरीय ज्ञान सुनकर सभी यज्ञ-वत्सों को समझाती थीं। वह तो उनके सामने ज्ञान एवं योग का नमूना थीं। सभी यज्ञ-वत्सों को सम्भालने के लिए वही तो निमित्त थीं। उन्हें प्रजापिता ब्रह्मा के समकक्ष स्थान पर बैठकर प्रतिदिन ज्ञान-वीणा वादन का अधिकार था। उन्हीं मातेश्वरी ने दुर्गा का रूप धारण करके यज्ञ-दुर्गा की रक्षा की, विघ्नों का सामना किया। जनता और सरकार द्वारा आयी विपत्तियों को झेला। भिन्न-भिन्न संस्कारों वाले यज्ञ-वत्सों को संस्कारों की भट्टी में से उन्हीं ने ही उज्ज्वल किया और एक-एक को ज्ञान-लोरी सुनाकर, ज्ञान-पालना दी। वही तो प्रथम शीतला माँ, सन्तोषी माँ और अन्नपूर्णा थीं। स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा उन्हें माला के युग्म मणिके में स्थान देते, उन्हें 'यज्ञ-माता' की उपाधि देते तथा आदरणीया मानते थे। उन्हीं को आगे रख कर वे उदाहरण देते थे कि सभी "पुरुषों" को चाहिए कि बहनों-माताओं को आगे रखें। बाबा स्वयं कई बार उन्हें रेलवे स्टेशन तक छोड़ने जाते।

मैं लगभग 50 देशों में गया हूँ, रूप-लावण्य में अनेकानेक सुन्दर नारियाँ भी देखी होंगी क्योंकि आँख बन्द करके यात्रा तो नहीं करता था। विद्वता, समाज सेवा, प्रशासन और वक्तृत्व में अग्रणी महिलाओं को भी देखा परन्तु माँ की दिव्यता, उनकी शालीनता, उनका सौन्दर्य स्वर्गिक था! उनका विवेक अद्वितीय था। वे मानवता से ऊपर उठकर पवित्र-पुनीत हंस वर्ण की थीं। उन्हें देख कर कोई पातक हो, घातक हो, चातक हो, सभी कहेंगे- "माँ"। वे पृथ्वी पर होते हुए भी पृथ्वी पर नहीं थीं। उनकी आध्यात्मिक चेतना, उनका योग प्रकाश ऐसा था कि देखने वाला भी शरीर को भूल कर आत्मनिष्ठ हो जाता था। आत्मनिष्ठ न भी हो तो भी उसमें आध्यात्मिक चेतना जाग उठती थी। कम-से-कम थोड़े समय के लिए तो उनके तमोगुणी और रजोगुणी संस्कार बन्द हो जाते थे और उनकी जगह सतोगुण का उदय होता था। ऐसी थी हमारी जगदम्बा सरस्वती माँ!

माँ, तुझे शत-शत प्रणाम!

माँ, ओ माँ तेरी शीतल छाँ!
तेरी वरदायिनी बाँ,
तेरी हँ में हँ हमें दिखता है आसमाँ!
ओ माँ!!!



दुश्मन के हर दाँव-पेच पहचानें



30 वर्ष की तपस्या के बाद भी महेश पवित्रता का आनंद न ले सका। उसके मन में उठने वाले संघर्ष, झूठे प्यार की भूख, स्वप्नों की तामसिकता और संसार का आकर्षण उसको ईश्वरीय रस पाने में व्यवधान बना रहा। वह यह सोच-सोच कर संतुष्ट रहता था कि बड़े-बड़े ऋषि मुनियों ने तो इस मार्ग को अत्यंत कठिन माना है। परंतु उसे यह पता ही नहीं था कि वह भगवान से अपने स्वरूप की पहचान के बाद व उसके अधिकारी वत्स बनने के बाद सम्पूर्ण तपस्या में रत हैं। जो मार्ग ऋषियों के लिए कठिन था, वह उसके लिए सुलभ है। क्योंकि उसे राह दिखाने वाला स्वयं भगवान है। परंतु भगवान की छत्रछाया में पलकर भी यदि किसी को पवित्रता की साधना नितांत कठिन लगे तो वह व्यक्ति सच्चा साधक नहीं है। अवश्य ही भगवान को पाकर भी आत्म संतुष्टि हेतु इधर-उधर निहार रहा है। भगवान ने उसकी अंगुली पकड़ी है, शायद इसका उसे अहसास ही नहीं। अब समय पवित्रता का वरदान लेकर आया है, यह भी उसे भान नहीं। मनुष्य के प्यार में मनुष्य भगवान से किए हुए वायदों को भी भूल जाता है। वह यह भी भूल जाता है कि अब मनुष्यों का प्यार उसे संतुष्टि नहीं देगा।

मनुष्यों के प्यार में आकर्षित होकर वह भगवान से भी मुंह मोड़ने की सोचने लगता है। माया की प्रबलता में उसकी आँखों पर काली पट्टी बंध जाती है, और वह बरबस बह जाता है। उस गंदे नाले की खोज में, जिसमें जन्म-जन्म बहकर उसने कष्ट उठाये।

इस युद्ध में माया का सम्पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है

समय ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों विनाश के काले बादल धरती पर घेराव डालते जा रहे हैं। रावण राज्य भी अपने अन्तिम दिन गिन रहा है। परंतु समाप्ति से पहले रावण अपनी पूरी सेना सहित, सम्पूर्ण बल पूर्वक आक्रमण करता है। इस बात का सम्पूर्ण बोध अब योगियों को होना चाहिए। अर्थात् ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ेंगे, संसार में कामुक्ता का प्रकोप भी बढ़ेगा। विदाई प्राणी के मन पर काम ही काम सवार है। चारों ओर कामुक वातावरण है। ऐसे में योगी जनों का माया के सभी सूक्ष्म वीरों का स्पष्ट ज्ञान होना अति आवश्यक है। जैसे यदि दो पहलवान आपस में लड़ रहे हों और एक पहलवान को यह ज्ञान ही न हो कि दूसरा पहलवान कौन-सा दाँव लगा सकता है, तो समय पर वह उसके दाँव को काट नहीं सकेगा और हार जायेगा। परंतु यदि उसे दूसरे पहलवान के सभी दाँव-पेच का ज्ञान हो तो वह उसको एक भी चाल नहीं चलने देगा। ठीक उसी प्रकार हमारा भी माया से जबरदस्त युद्ध है। हमें विजयी बनने के लिए माया के सभी सूक्ष्म रूपों का ज्ञान होना ही चाहिए। अन्यथा हमारे मुख से यही निकलेगा कि हमें क्या पता था कि माया इस रूप में भी वार कर सकती है। अगर हम माया के वार को, दूसरों का प्यार व सहयोग समझ लेंगे, माया को ही सुखों की अनुभूति मान लेंगे, तो तब हमारे हाथ लगेगा केवल पश्चाताप...।

अतः हमें इस अंतिम पड़ाव में माया के हर सूक्ष्म चाल, दाँव-पेच को समझते हुए, उसकी चाल को नाकाम करना है। हमें हर माया के सूक्ष्म स्वरूप को, उसकी हर चाल को समझते हुए उसका सामना भी करना है। जैसे श्रीकृष्ण अर्जुन के साथ था तो उसे निश्चय था कि विजय तो हमारी ही होगी। भले वह कभी-कभी निराश और उदास हो जाता था किन्तु उसे श्रीकृष्ण का साथ और उनकी विजय निश्चित है, उस स्मृति ने उसे अपने मकसद में कामयाबी दिलाई। तो जरा सोचो, हमारे साथ कौन है, हमें कौन साथ दे रहा है, हमारा सारथी कौन है, उसकी स्मृतियां व सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इस समय हमें स्वयं भगवान साथ दे रहा है, हम अकेले युद्ध न लड़ें। दोनों साथ-साथ होकर आगे बढ़ें। वो सर्वशक्तिवान- सर्वशक्तियों सहित हमारे साथ है। तो सोचो, भला उनके सामने किसी की भी, कैसी भी चाल चल सकेगी! इसीलिए समय और सारथी को पहचानें और आगे बढ़ें। बाबा हर रोज माया के सूक्ष्म स्वरूप कैसे वार करेंगे, उसके दाँव-पेच हमें मुरलियों (परमात्मा के महावाक्य) के माध्यम से याद दिलाते हैं। इसलिए आप इस सूक्ष्म स्वरूप को जानों और मैं साथ हूँ उसका विश्वास प्रगाढ़ करो। समय और सर्वशक्तिवान साथी का लाभ उठाओ।

किसी भी परिस्थिति में त्रिकालदर्शी की सीट पर स्थित रहेंगे तो भयभीत नहीं होंगे

जब नया मकान हमको बनाना है तो पुराने का ज़रूर विनाश करना होगा। पुराने के बीच में नया तो नहीं बनायेंगे ना! तो हम लोगों ने संगम पर चैलेन्ज की है कि पुरानी सृष्टि जाने वाली है, नई सृष्टि आने वाली है।

बाबा ने हमें त्रिकालदर्शी बनाया है इसलिए किसी भी दृश्य को देखते हमें भय नहीं हो सकता। वर्तमान में कोई रो रहा है, कोई चिल्ला रहा है, कोई मर रहा है, कोई भूख से तड़प रहा है या अर्थव्यवस्था हो रहा है या कुछ भी हो रहा है, लेकिन हम सिर्फ उस वर्तमान नज़ारे को नहीं देखते हैं। हम इस वर्तमान में भविष्य क्या छिपा हुआ है उसे जानते हैं। हमें तीनों ही कालों की नॉलेज है। नॉलेज को कहते ही हैं- नॉलेज इज़ लाइट, नॉलेज इज़ माइट, तो नॉलेज की लाइट होने के कारण हम तीनों कालों को देखते हैं, सोचते हैं और फिर माइट होने के कारण हमको कोई दुःख की फीलिंग नहीं आती। नहीं तो कभी भी ऐसा कोई दृश्य देखते हैं तो घबरा जाते हैं या भय से कुछ अपना होश नहीं रहता, अनकांसेस हो जाते हैं, ज्ञान-योग सब भूल जाते हैं, लेकिन हमें ज्ञान-योग भूल नहीं सकता क्योंकि हमने ही तो कहा है कि हमारा राज्य आने वाला है

और हम बापदादा के साथ पुरानी सृष्टि के विनाश और नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त हैं। जब नया मकान हमको बनाना है तो पुराने का ज़रूर विनाश करना होगा। पुराने के बीच में नया तो नहीं बनायेंगे ना! तो हम लोगों ने संगम पर चैलेन्ज की है कि पुरानी सृष्टि जाने वाली है, नई सृष्टि आने वाली है। कलियुग जा रहा है, सतयुग आ रहा है। रात जायेगी तब तो दिन आयेगा ना! तो हम लोगों को यह पता है कि यह विनाश तो होना ही है, 'नथिंग न्यु'। यह कल्याणकारी विनाश है। तो विनाश देखने के लिए त्रिकालदर्शी स्थिति के तख्त पर बैठना है, अगर त्रिकालदर्शी की स्थिति में स्थित नहीं होंगे, तो भयभीत होंगे, घबरायेंगे। दूसरी बात - यह विनाश कोई साधारण विनाश नहीं है, कल्याणकारी है। अब कहेंगे नाम विनाश है, सबकी मृत्यु होगी फिर कल्याणकारी कैसे हो सकता है? मृत्यु तो खराब चीज़ होती है। लेकिन यह



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

विनाश क्यों कल्याणकारी है? क्योंकि मैजारिटी आत्मायें चाहती हैं कि हम इस चक्कर से छूटें, हमको तो मोक्ष चाहिए। तो विनाश के बाद हमें जीवनमुक्ति मिलेगी लेकिन दूसरी आत्मायें परमधाम में जाकर रेस्ट करेंगी, दूसरी आत्माओं की जो शुभ इच्छा है, इस चक्र से निकलना चाहते हैं, वह तो इस विनाश के बाद ही पूरी होगी। हम लोगों के लिए कल्याणकारी इसलिए है क्योंकि हमको जीवनमुक्ति का वर्सा मिल जायेगा। स्वर्ग के फाटक यही विनाश खोलेगा। तो विनाश में दो कल्याण हैं- हमारे लिए स्वर्ग के गेट खुलेंगे, दूसरों को मुक्ति मिलेगी इसीलिए यह नॉलेज होने के कारण ही हम घबराते व भयभीत नहीं होते हैं।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा हम बच्चों को याद की यात्रा में रहने की अनेक प्रेरणायें देते रहते हैं। अन्तःवाहक शरीर से सेवा करने के लिये स्वयं की भी ऐसी स्थिति तैयार करनी है। बाबा का रोज हम बच्चों के प्रति यही इशारा है, यही सूक्ष्म अभ्यास हरेक को बढ़ाना है। तो हरेक कौन-सा सूक्ष्म पुरुषार्थ करते हो? प्योरिटी पर ही सारा मदार है। प्योरिटी है तो लाइन क्लीयर है। बाबा की जो भी प्रेरणायें हैं वह हम तभी कैच

बापदादा की प्रेरणाओं को कैच करने का साधन - प्योरिटी

कर सकते हैं जब सूक्ष्म में भी प्योरिटी की धारणा है। अगर देखना झोली में छेद तो नहीं है? लीक तो नहीं होती? अगर प्योरिटी की वृत्ति सूक्ष्म कम्पलीट होगी तो लीक हो नहीं सकती। इसके लिए सदैव भाई-भाई की, स्नेह की वृत्ति चाहिए। अगर हम कहते हैं कि हम प्यार के सागर के बच्चे हैं तो अपने से पूछो कि हम कहाँ तक प्रेम स्वरूप बने हैं? हम आत्मा स्नेह स्वरूप हैं? अगर स्नेह की सब्जेक्ट में जरा-सी लीकेज होगी तो बाप से स्नेह की लाइन टूट जायेगी। स्नेह की लाइन आपस में भी टूटी तो अन्दर वह ठक-ठक करती रहेगी। फिर योग की व स्नेह स्वरूप की अनुभूति हो नहीं सकती। बाबा ने जो दिया है - ज्ञान, प्यार, शक्तियां

उन सबका रिटर्न दो और रिटर्न अर्थात् वापस चलने की तैयारी करो। इसके लिए मुख्य है समेटने की शक्ति। अब इस शक्ति की परसेन्टेज को बढ़ाओ। बाबा ने जो ऋण दिया है वह रिटर्न कर रहे हैं तथा रिटर्न जाने की तैयारी कर रहे हैं? यही चार्ट चेक करो। योग का चार्ट बढ़ाते-बढ़ाते हमें कर्मातीत बनना है तो अपने से पूछो - कर्मातीत बनने के लिये हमारे सारे हिसाब चुकतू हो गये हैं? कोई भी पंछी किसी भी घड़ी उड़ सकता है, इस श्वास का कोई भरोसा नहीं। इसलिए हमेशा अपना खाता कम्पलीट कर रखना है। अगर हमारे योग का चार्ट ठीक है तो हम अपने पुरुषार्थ से सदा सन्तुष्ट रहेंगे।

उन सबका रिटर्न दो और रिटर्न अर्थात् वापस चलने की तैयारी करो। इसके लिए मुख्य है समेटने की शक्ति। अब इस शक्ति की परसेन्टेज को बढ़ाओ। बाबा ने जो ऋण दिया है वह रिटर्न कर रहे हैं तथा रिटर्न जाने की तैयारी कर रहे हैं? यही चार्ट चेक करो। योग का चार्ट बढ़ाते-बढ़ाते हमें कर्मातीत बनना है तो अपने से पूछो - कर्मातीत बनने के लिये हमारे सारे हिसाब चुकतू हो गये हैं? कोई भी पंछी किसी भी घड़ी उड़ सकता है, इस श्वास का कोई भरोसा नहीं। इसलिए हमेशा अपना खाता कम्पलीट कर रखना है। अगर हमारे योग का चार्ट ठीक है तो हम अपने पुरुषार्थ से सदा सन्तुष्ट रहेंगे।

सवरे-सवरे स्त्रायें बाबा की दी खुराक

मुरली सुनते-सुनते शरीर छूटे तो महान् भाग्यशाली है। जहाँ जीना है वहाँ अमृत पीना है। जिसने पहले कभी भी मुरली मिस की हो वे यह दृढ़ संकल्प कर लें कि मरने तक मुरली मिस नहीं करेंगे।

सवरे-सवरे बाबा कितनी अच्छी खुराक खिला देता है। खुराक सवरे खाई जाती है। दिन में खायेंगे तो हज़म नहीं कर सकेंगे। खुराक माना जिसमें दवा भी हो तो दुआ भी हो और जो ज़रूरत हो वह सब शक्ति मिलती रहे। बाबा सबके मन की आशा पूर्ण करता है। हमारे मन में बाबा से मिलन के सिवाए और कोई आश न रहे तो सदा मिलन मनाते रहेंगे। बाबा मुरली भी चलाते हैं तो सब कहते हैं बाबा ने मेरे लिए मुरली चलाई। इसलिए मुरली से बहुत प्यार है। जिसने पहले कभी भी मुरली मिस की हो वे यह दृढ़ संकल्प कर लें कि मरने तक मुरली मिस नहीं करेंगे। मुरली सुनते-सुनते शरीर छूटे तो महान् भाग्यशाली है। जहाँ जीना है वहाँ अमृत पीना है। संगमयुग में केवल बाबा, मुरली और मधुबन चाहिए। बाबा है तो मुरली है, मुरली है तो मधुबन है। बाबा हम सबको एक जैसा बेहद प्यार

करता है क्योंकि बेहद का बाबा है। बाबा से इतना प्यार हो जो किसी इन्सान से तो क्या देव आत्मा से भी न हो। हमको पता है हम स्वर्ग में जाने वाले हैं, लक्ष्मी-नारायण के राज्य में जाने वाले हैं। हम त्रेतायुगी नहीं हैं जो ईर्ष्या, लड़ाई, झगड़ा, द्वेष भाव रखें। हमने कभी यह सोचा भी नहीं कि यह ब्रह्मा की मत है या शिवबाबा की मत है। सदा ही हमारे मन से निकला भगवान् भाग्यविधाता है। इसमें शिवबाबा न होता तो हम कैसे खिंचे चले आते, ब्रह्मा बाबा न होता तो हम किसके पास आते। गुरु है शिवबाबा और गोविन्द है यह ब्रह्मा बाबा, जिसने गऊओं को सम्भाला। अभी तक कन्याओं, माताओं की कैसे सम्भाल कर रहा है। उन्हें लायक बनाया है, शेरनी शक्ति बनाया है। मुरली के आधार से हमारी रक्षा हुई है। तो सदा मुरली के पीछे मस्ताना बनना है। मस्ती तभी चढ़ती है जब मुरली सुनते हैं। बाबा



राजयोगिनी दादी जानकी जी

कहते हैं किसकी दबी रहेगी धूल में, किसकी राजा खाये। हमको खुशी है तन, मन, धन और समय सफल हो गया। जैसे बाबा ने कहा वैसे हमने फॉलो किया। श्रीमत मिलती है कि सब सफल करो। तो हमको तन, मन, धन और समय सफल करना है। सबसे ज़्यादा कीमती, समय है। उसके पीछे कीचक पड़ते हैं जो समय बरबाद करते हैं। माया हमारे पास आये ही क्यों? हम खबरदार होशियार रहें, शिवशक्ति होकर रहें। माया कमज़ोर के पीछे आती है। बहादुर के पीछे माया आ नहीं सकती। बाबा हमारा साथी है।

खुदा के खजानों की खजांची - दादी ईशू



ब.कु. सुदेश दादी,
डायरेक्टर जर्मनी

परमात्मा जब परिवर्तन की गाथा लिखते हैं तो उसमें समय के ज्ञान के साथ कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान भी होता है। उनके पास सर्व आत्माओं के कर्म-खातों को चुकतू करने की एक निराली विधि विधान है। जो चयनित आत्माओं के द्वारा परमात्मा सत धर्म, सत राज्य स्थापन कर रहे हैं। उस निराले कार्य में स्वयं विचित्र गुप्त ने दादी को अपने साथ चित्रगुप्त के रूप में शामिल किया। वे सबकी कर्म कहानी को जानते हुए भी इतनी न्यायी, निष्पक्ष, निर्माण और निश्चल भाव से रहीं। वे परमात्मा के दिए हुए कार्य में खरी उतरीं। और उस कार्य को सम्पूर्ण रीति से पूर्ण कर, फरिश्ता बन उड़ चलीं...

बाबा के हीरों के हार में से एक हीरा शिफ्ट हो गया, बाबा की भविष्य माला में। बाबा के कर्तव्य में, आदि से लेकर यज्ञ के स्थापना में, बाबा के अंग-संग, मम्मा के अंग-संग रह जो प्यार से पालना ली, वही पालना का स्वरूप ईशू दादी में दिखाई पड़ता था। यानी कि बाबा से उन्होंने जो कुछ लिया, प्राप्त किया उसी यथार्थ रूप में सबको साक्षात् अनुभव कराया। और हमने भी उनसे ये अनुभव पाया। वे ज्ञान सागर की गोल्डन गागर थीं। ज्ञान सागर बाप की लहरों को, रत्नों को गागर में समा कर हम सबके समक्ष रखा। उस समय तो कोई विशेष रीति से ऐसी कोई भाषा तो नहीं थी, परंतु उन्होंने अपनी स्पेशल (शॉर्ट हैंड) लिखत को प्रगट किया। बाबा का ज्ञान बड़े अक्षरों में, बाबा स्वयं लिख कर देते थे तो दादी छोटे अक्षरों में हमारे तक पहुंचाने की सेवा करती थीं। बाबा के मुरली के एक भी रत्न को मिस नहीं होने दिया। तो ये विशेष महारथी रत्नों के साथ रहकर, अब तक जो भी हमें ज्ञान रत्न मिल रहे हैं ये उसी गोल्डन गागर द्वारा, जो ईशू दादी ने मुरली लिखी, रिपीट हो रही है। एक तरफ बाबा के विश्वास पात्र खजानों की

खजांची और दूसरी तरफ बाबा के अमूल्य अनंत अविनाशी खजानों को हम सब को बाँटने वाली दादी ईशू, जो कि हम सबके जीवन का आधार है। ऐसी महान विभूति का किस तरह, किन शब्दों में आभार प्रकट करें! किस भाव से आपको श्रद्धांजलि दें! जो हमारे पास ज्ञान रूपी ताजा-ताजा गर्म हल्वा पहुंचाने के निमित्त बनीं। दूसरी बात वे खुदा की खत की कलम थीं। जो भी बाबा के पत्र आते थे, जैसे कि आपने सुना है कि कोई पढ़ नहीं सकता था क्योंकि एक तो सिंधी भाषा में होता और दूसरा बाबा की अपनी लिखित में। उसको पढ़ करके, उसी को बिल्कुल एक्कूर और एक्कूरसी से, बिना किसी शब्द या भाव को चेंज किये, हुबहु ऑनेस्टी से उसी स्वरूप में लिखती थीं। पत्रों में कई प्राइवेट बातें भी होती थीं। पर्सनल लाइफ हिस्ट्री के भी पत्र भेजते थे, यज्ञ की परिस्थितियों के भी पत्र और सेवाकेन्द्रों के भी। ईशू दादी में हमने देखा वे ऐसी गंभीरता की खान थीं कि कभी भी उनके चेहरे ये मालूम नहीं पड़ता था कि उनको किसी की सिक्रेट बातों का भी मालूम है। ये सब जानते हुए भी

उनके ऊपर कोई प्रभाव नहीं दिखता था। लगता नहीं था कि उनको कोई कर्म कहानी याद भी है। ऐसे लगता था कि बाबा सत धर्म, सत राज्य स्थापन कर रहे हैं और वे विचित्र गुप्त के साथ चित्रगुप्त भी थीं। सबकी कर्म कहानी को जानते हुए भी इतनी न्यायी, निष्पक्ष, निर्माण और निश्चल भाव से रहीं। ऑफिस में बहुत बारी हमने ऐसा देखा कि बाबा- दादी के साथ कुटिया में होते थे, और कुछ यज्ञ के बारे में बता रहे होते थे, ऐसे में ईशू दादी भी वहाँ न्यायी-प्यारी होकर लिखतीं। सबकुछ जानते हुए भी गम्भीरता से अपने में समा लेती थीं। उन्होंने वो पत्र पढ़े, सुने, परन्तु जैसे दर्पण पर कोई चित्र आता है, जैसे ही सीन चेंज होता है, दर्पण पर उसका कोई निशान नहीं रहता, उसी की तरह थीं दादी। उनका जीवन इतना निर्मल, स्वच्छ और शुद्ध, हृदय इतना पवित्र, न वायब्रेशन से, न दृष्टि से, न किसी प्रकार की वाणी से, व्यवहार से पूर्ण रूप से जैसे कि निश्चल, न्यायी, साक्षीदृष्टा, स्वच्छ ज्ञान गंगा। जो भी मिला पत्रों में वो सागर में चला गया, समा लिया। वास्तव में रियल गोल्ड किसको कहा जाता है ये दादी से अनुभव किया। विघ्न तो बहुत आते थे इस बेहद यज्ञ में। इतने बड़े यज्ञ-

कारोबार में नैचुरल होगा उतार चढ़ाव आयेगे ही। तो हर परिस्थिति में दादी एकदम साक्षी दृष्टा रहतीं। बाबा के साथ, दादीयों के साथ रहते हुए भी सबके साथ ऑनेस्टी से रहीं। दादी हर जगह बाबा के साथ जाती थीं। यज्ञ के अकाउंट के

मोल्ड हो जाता है। ऐसे ही हर परिस्थिति में, बाबा-मम्मा के साथ, ऐसे फिर दादी-दादीयों के साथ, फिर दादी प्रकाशमणि के बाद, ईशू दादी जी मोहिनी बहन और मुन्नी बहन के साथ भी ऐसे ही फ्लेक्सिबल थीं। ये भी एक बहुत बड़ी विशेषता रही, बुद्धि की शुद्धि और निर्माणता। ये भी देखा कि बाबा के अकाउंट्स में, सेंटर रोल होते हुए भी कोई अहम् नहीं। किसी के ऊपर किसी भी प्रकार का अपना कोई प्रभाव नहीं। किसी भी प्रकार का, किसी को कोई वायब्रेशन नहीं कि ये मेन रोल प्ले करने वाली हैं। बिल्कुल गुप्त, तो जितनी गुप्त, उतनी प्रत्यक्ष।

भगवान का भण्डारा व भण्डारी दोनों एकदम लगावमुक्त, अहम मुक्त सम्भाला। साथ-साथ यज्ञ में रहने वाले हरेक यज्ञ वत्सों का भी ख्याल रखना क्योंकि खजांची होने के नाते किसको क्या चाहिए, किसकी क्या आवश्यकता है उन सबको ध्यान में रखा। किसी को खर्च चाहिए होता तो खर्च के लिए उनके पास ही जाना होता था। और बड़े प्यार



सम्बन्ध से, यज्ञ की संभाल के हिसाब से। बाबा उनको कॉन्फिडेंशियल सेक्रेटरी कहते थे। कौन-सी चीज़ कहाँ रखनी है, किससे सम्बन्धित है ये सब दादी जी देखभाल रखती थीं। परन्तु सब के साथ रहते हुए फ्लेक्सिबिलिटी बहुत थी। दादी के साथ भी ऐसे ही रहीं जैसे गोल्ड,

से सबको संतुष्ट करतीं। हिसाब में भी एकदम एक्कूर थीं। ऐसे थीं एक्कूर, एक्कूर, सदा सहयोगी हमारी ईशू दादी। ऐसी महान तपस्विनी, ऑनेस्टी की पराकाष्ठा से विभूषित सृष्टि रचयिता की चित्रगुप्त दादी ईशू को भावभीनी श्रद्धासुमन।

हमारी प्राणप्यारी, अति स्नेही 'दादी ईशू जी' जिनका बाबा का दिया हुआ नाम पूर्णशांतामणि है। दादी जी का लौकिक जन्म सिन्धु हैदराबाद कराची रॉयल घराने में हुआ। लेकिन दादी जी सम्पन्न परिवार से होते हुए भी शांत चित्त, अन्तर्मुखता की खान थीं। दादी जी जितनी हर्षित मुख थीं, उतनी गम्भीर भी। उनके तेजस्वी नयन जैसे कि बाबा की ही याद दिलाते। हरेक व्यक्ति महसूस करता था कि जैसे हम बाबा से मिलकर आये हैं। दादी जी बहुत उपराम रहती थीं। किसी भी कार्य व्यवहार में बाबा और ड्रामा ये दोनों बातें उनके मन में पक्की थी। दादी जी हमेशा हरेक भाई-बहनों को अपनेपन की भासना देतीं, उन्हें इतना प्यार-दुलार देती जिससे वे महसूस करते थे कि ये मेरी माँ है। इस तरह से हरेक को अपने अलौकिक प्यार में बांध देती थी।

दादी जी बहुत सहनशील भी थीं। उन्हें कोई तकलीफ भी होती तो वे कभी भी अपने चेहरे से ब्यां नहीं होने देती थीं। कोई भी उन्हें पूछता कि दादी जी कैसे हैं, तो वे हमेशा यही कहती कि मैं सदा 'ओके' हूँ। और दोनों हाथ ऊपर करके खुशी का इजहार करती और औरों को भी खुशी और आनंद से भर देतीं। जब कभी दादी जी की थोड़ी तबियत ऊपर-नीचे होती तो जब हम उनको हॉस्पिटल लेकर जाते, डॉ. दादी जी से पूछते कि दादी जी

आपको क्या हुआ है तो दादी जी डॉ. को भी यही कहतीं कि मैं सदा 'ओके' हूँ। डॉ. भी सोच में पड़ जाते कि कैसे हम इनकी बीमारी का



बाबा कैसे पालना करते थे, मम्मा के बारे में, दादी जी के बारे में कि वो कैसे पुरुषार्थ करते और वे इतना कारोबार करते भी कैसे हल्के रहते, ये सब भी बतातीं। दादी का लौकिक नाम तो 'ईश्वरीय' था, इसलिए उनको प्यार से ईशू कहते थे। दादी जी ने बताया कि जब मेरी आयु 8 वर्ष की थी, तब हमारा घर और बाबा का घर पास-

दादी ने सिखाया 'ओके' का पाठ - ब.कु. कविता दादी

इ ल । ज करें। फिर डॉ. मेरे से पूछते थे कि दादी जी को क्यों लाये हो? और सारी रिपोर्ट देखकर ही इलाज करते थे। ऐसी बहुत-सी यज्ञ की बातें हैं जो दादी जी हमें सुनाते थे। ब्रह्मा

पास था। उन्होंने बताया कि जब वे एक दिन घर से बाहर निकले तो साकार बाबा से मुलाकात हुई। उस पहली मुलाकात में ही उनको ऐसी भासना आई जैसे कि ये कोई साधारण व्यक्ति नहीं, ये तो साक्षात् भगवान हैं। और बाबा ने देखते ही दादी जी को कहा कि 'आओ बच्ची आओ'! दादी जी तुरंत बाबा की गोद में चले गये। बाबा ने कहा आओ बच्ची चले...उसी समय निश्चयबुद्धि हो दादी जी बाबा के साथ चल पड़ीं। ये भी नहीं सोचा कि हम कहाँ जा रहे हैं। उसके बाद दादी जी अपने लौकिक घर कभी वापिस नहीं गये। फिर दादी जी का निश्चय 'एक बल एक भरोसा' देख उनके लौकिक परिवार के सभी सदस्य सरेंडर हो गये।

बाबा के घर में ही सत्संग चलता था, जिसका नाम 'ओम मंडली' था। बाबा जब सत्संग चलाते थे तो को रोज नये-नये साक्षात्कार, कभी श्रीकृष्ण के साथ रास कर रहे, कभी शूबी रस पीना। ऐसे रोज कोई न कोई नये अनुभव होते। दादी जी यज्ञ के कारोबार में हमेशा बिजी रहतीं, बाबा जब पत्र लिखते तो वो सिंधी भाषा में होते थे, दादी जी फिर उनको हिन्दी में ट्रांसलेट करके लिखतीं। बाबा ने दादी जी को छः डिपार्टमेंट सम्भालने के निमित्त बनाया। दादी जी ने सभी डिपार्टमेंट्स को सुचारू रूप से सम्भाला। उन्होंने जी हुजूर का पार्ट बजाया और आज्ञाकारी, ईमानदारी, वफादारी की मिसाल दी। हमने बाबा को साकार में नहीं देखा लेकिन दादी जी ने साकार बाबा की पालना की अनुभूति कराई। यह स्वयं परमात्मा शिव बाबा का यज्ञ है इसका क्या महत्व है वो भी समझातीं। ऐसी दादी जी के अंग-संग रहने का मुझे सौभाग्य मिला। दादी जी आज भी हमारे साथ हैं। उनकी शिक्षायें हम कभी भी भूल नहीं पायेंगे।



डॉ. कु. बृजमोहन, ब्रह्माकुमारीज
अतिरिक्त महासचिव, दिल्ली

अलौकिक वात्सल्य की मूरत मम्मा

तो बस बैठी हुई मुस्कुराये जा रही थीं। परन्तु उनकी उस मुस्कान में ही कुछ ऐसा जादू था कि मुझे उनकी ओर से बुलाने की स्पष्ट महसूसता हुई। मैं स्वतः ही उठा और जाकर अलौकिक माँ के पास बैठ गया। अहा! कितना तपत बुझाने वाला था उनका सान्निध्य! उसी क्षण मैंने जान लिया कि भक्तजन माँ को 'शीतला' कहकर क्यों पुकारते रहे हैं! माँ ने अपने पंख समान कोमल और कमल समान पवित्र हस्तों से मुझे प्यार की थपकी देते हुए मेरा मुख मीठा कराया था। जितने दिन मैं आबू में रहा, मैंने एक अजीब-सी उलझन महसूस की जिसका जिक्र मैंने आज तक किसी से भी नहीं किया है। आप सोचते होंगे कि ऐसी भी कौन-सी अनोखी उलझन हो सकती है जिसको मैंने अब तक अपने पास ही रख छोड़ा है! वह बात दरअसल यह थी कि क्लास में, 'चैम्बर' में (उन दिनों बाबा और मम्मा क्लास के बाद ज्ञान की चिट-चैट करने के लिए दूसरे कमरे में आकर बैठा करते थे, जिसको 'चैम्बर' कहते थे। 'टोली' भी मिला करती थी) या जहाँ-कहीं भी बाबा और मम्मा दोनों विराजमान होते, तो मैं इस दुविधा में पड़ जाता कि दोनों में से किससे दृष्टि लूँ और किसकी दृष्टि से वंचित रहूँ? एक ओर ज्ञानसूर्य का तेजस और प्रकाश होता तो दूसरी ओर ज्ञानचंद्रमा की चाँदनी और शीतलता होती। मैं दोनों को ही इकट्ठा प्राप्त करते रहना चाहता था। खैर, बाद में तो मैंने उसका हल निकाल लिया

और दोनों से बारी-बारी से दृष्टि लेता रहता।

लौकिक माँ की भी अलौकिक माँ

यूँ तो मम्मा एक युवा अवस्था की कन्या ही थीं परन्तु यज्ञमाता का कार्य सम्भालते ही उनके अन्दर ऐसा परिवर्तन आया जो कोई भी उनके सामने आता, चाहे कोई वृद्ध से भी वृद्ध व्यक्ति आता उनको उनसे स्वाभाविक तौर पर माता की ही

बाबा के पास भोग ले जाने वाली 'सन्देशी' शारीरिक नाते से मम्मा की लौकिक माता थीं। उस लौकिक माता को अपनी ही लौकिक बच्ची को अपनी 'अलौकिक माँ' के सम्बन्ध से और मम्मा को उसके साथ 'अलौकिक बच्ची' के सम्बन्ध से व्यवहार करते देखा, तो देखता ही रह गया! पहली बार जब मैंने इस दृश्य को देखा तो मेरे रोमांच खड़े हो गये थे। मम्मा के सामने उनकी लौकिक माता वृद्धा होने

लौकिक परिवार ज्ञानमार्ग में चल पड़ा था। उस क्षण के अनुभव से 'लौकिक' नातों को 'अलौकिक' में परिवर्तित करने में मुझे बड़ी मदद मिली थी।

एक सम्पूर्ण मातृदेवी

मम्मा दिव्यगुणों की सम्पूर्ण साक्षात् देवी थीं। उनके संकल्प चञ्चल की तरह अडिग, बोल मीठे तथा सारयुक्त और कर्म श्रेष्ठ तथा युक्तियुक्त थे। मम्मा इतनी योगयुक्त, गम्भीर और शान्त रहती थीं कि उनके आस-पास के वातावरण में सन्नाटा छाया रहता था जो सभी को प्रत्यक्ष महसूस होता था। ऐसा लगता था कि मानो वह कोई चलता-फिरता लाइट हाउस और माइट हाउस हो। मम्मा की चाल फ़रिश्तों जैसी थी। यज्ञ के भाई-बहनों को पता भी नहीं चलता था कि कब मम्मा उनके पास से गुजर गयीं अथवा कब से वह उनके पीछे खड़ी हुई उनकी एक्टिविटी का निरीक्षण कर रही थीं। मम्मा के बोल बहुत ही मधुर, स्नेहयुक्त और सम्मान-पूर्ण होते थे। मम्मा ने मुझे सदा 'बृजमोहन जी' कहकर बुलाया। पत्र में वह मुझे सदा 'लाडले बृजमोहन जी' लिखती थीं। पत्र द्वारा या व्यक्तिगत मिलने पर वह सबसे पहले शारीरिक तबीयत का हाल-चाल अवश्य पूछती थीं। उस अलौकिक माता का बच्चों से जितना असीम प्यार था उतना किसी लौकिक माता का क्या होगा? मुझे तो ऐसे लगने लगा था कि जैसे कि मेरी लौकिक माँ भी मम्मा ही हैं।



भासना आती थी। वैसे तो मैंने उसी दिन अपने लौकिक पिता तथा अन्य बड़ी आयु वाले बच्चों को भी उनसे 'मम्मा-मम्मा' कहकर मिलते और बरतते हुए देखा था परन्तु इसका एक और अनोखा अनुभव होना अभी बाकी था। गुरुवार के दिन मधुबन आश्रम से ध्यानावस्था में जाकर शिव

के बावजूद भी सचमुच उनकी बच्ची के समान ही लग रही थीं। किस प्रकार संस्कार, स्वभाव और कर्तव्य के बदल जाने से मनुष्यात्मा का सारा वातावरण तथा उसके सारे सम्बन्ध ही बदल जाते हैं, इस सत्यता की छाप मुझ पर उसी घड़ी लग गयी थी। मैं सौभाग्यशाली था कि मेरा भी सारा ही

कौन निर्धारित करता हमारा जन्म और मृत्यु



डॉ. कु. उषा, वरिष्ठ
राजयोग प्रशिक्षिका

प्रश्न : दीदी जी जन्म अगर हमारे कर्मों से डिजाइड होते हैं तो फिर डेथ जो होती है चाहे नैचुरल डेथ, चाहे बीमारी से या फिर किसी भी रीति से तो वो कौन डिजाइड करता है?

उत्तर : ऐसा है कि साइंस का एक रिसर्च हुआ है कि जो लोगों को पास्ट लाइफ रिग्रेशन में ले जाते हैं और जिनको भी हिप्नोटाइज करके पास्ट लाइफ में ले गये तो अमेरिका के अन्दर लगभग सवा लाख भाई-बहनों को पास्ट लाइफ में ले गए। और जब ले करके उनको कुछ सेटअप क्लेशन पूछे, उसमें मैजोरिटी से पूछा गया कि जब शरीर छोड़ा तो आप कहाँ गये थे? भगवान नाम की कोई चीज है? और क्या आप भगवान से मिले? और उसने क्या कहा? क्या वो आपके जन्मों को डिजाइड करते हैं? ऐसे उन सबसे सवाल पूछे गए। और मैजोरिटी लोगों का जो उत्तर आया, उससे ये कर्म फिलॉसफी को समझना हमारे लिए और आसान हो जाता है। क्योंकि मैजोरिटी ने ये कहा कि जब हमने शरीर छोड़ा चाहे नैचुरल डेथ है या एक्सीडेंटल डेथ है जिस भी तरीके से। ये शरीर

छोड़ने के बाद हम एकदम हल्के होकर जाते हैं ऊपर। वहाँ एक लाइट से मिलते हैं और वो लाइट बहुत पावरफुल होती है। उस लाइट से बहुत प्रेम प्राप्त होता है, शायद वही भगवान होगा। क्योंकि इतना प्यार देने वाला और कोई नहीं होता। हमें इतना प्यार मिलता है ऐसा लगता है जैसे एक फाउंटन में हम नहा रहे हैं। और उस प्रेम में नहाकर आत्मा शुद्ध हो रही होती है। फिर उनसे पूछा गया कि क्या फिर परमात्मा आपके कर्मों का दण्ड देता है, सजा देता है, क्या करता है? तो कहा कि नहीं वो कुछ नहीं करते, वो तो प्रेम ही बरसाते रहते हैं। लेकिन जब हम शुद्ध हो जाते हैं तो उसके बाद सारी लाइफ एक फिल्म की रील की तरह हमारे सामने से गुजरने लगती है। बचपन से लेकर हमने कैसे कर्म किए, कहाँ-कहाँ से गुजरे, क्या-क्या किया। एक-एक दृश्य हमारे सामने आता है। जैसे-जैसे हम दृश्य देखते जाते हैं और जो बुरा कर्म हमने किया होता है, क्योंकि उस वक्त आत्मा शुद्ध अवस्था में होती है, इसीलिए जब हम अपने ही बुरे कर्मों को देखते हैं तो इतनी ग्लानि महसूस होती है, इतना पश्चाताप महसूस होता है कि क्या ये मेरे कर्म हैं, ऐसे-ऐसे कर्म किए मैंने, इतने लोगों को दुःख दिया, इतने लोगों को कष्ट दिया। और फिर अन्दर से आता है कि जिन-जिन लोगों को हमने दुःख दिया, कष्ट दिया, तकलीफें दी उसके साथ जाकर हम अपना अकाउंट सैटल कर लें। और इस ख्याल से हम वहाँ से वापस आते हैं, वहाँ से आना नहीं चाहते हैं बस यही चाहते हैं कि परमात्मा के सानिध्य में ही रहें और इस प्यार

में नहाते रहें। इस प्रेम की अनुभूति में रहें। लेकिन जिस-जिस के साथ, जो-जो हमने बुरे कर्म किए हैं, बुरे कर्मों का हम सोचते हैं कि फिर आराम से आ जाएं ईश्वर के सानिध्य में। इसलिए हम वापस आते हैं पृथ्वी पर। और फिर पृथ्वी पर हम डिजाइड करते हैं कि कहाँ हमें जन्म लेना है, उस माँ-बाप का चयन करते हैं और हम ये डिजाइड करते हैं कि इस कर्म का फल हम कैसे भोगेंगे। ये हम खुद डिजाइड करते हैं। इस कर्म का फल भोगने के लिए ये होनी, होनी जरूर है। ये कहा जाता है न कि होनी को कोई टाल नहीं सकता, क्योंकि वो होनी फिक्स की गई है। तो उस कर्म के कारण हम होनी को फिक्स करते हैं। कि ये होनी होगी और इससे मेरा ये अकाउंट क्लीयर होगा।

तो उस होनी को हम फाइनल करते हैं। उसके बाद ये भी फाइनल करते हैं कि इस कार्मिक अकाउंट को सैटल करने के लिए मुझे कितने साल चाहिए। तो आयुष्य भी फाइनल करते हैं कि पंद्रह साल में मेरा ये सारा अकाउंट क्लीयर हो जायेगा। पच्चीस साल चाहिए या पचास साल, इतने अकाउंट को क्लीयर करने के लिए। वो सारी डेस्टिनी को हम फाइनलाइज करते हैं, जो-जो सम्भव है। बाकी की हम दूसरे, तीसरे जन्म के लिए छोड़ देते हैं।

तो हम ही माँ-बाप को फाइनलाइज करते हैं, होनी को फाइनलाइज करते हैं, आयुष्य फाइनलाइज करते हैं क्योंकि उस समय हमें किसी से अटैचमेंट नहीं होता। और हम ये भी फाइनलाइज करते हैं कि हमारी मृत्यु का कारण क्या होगा। अगर हम पंद्रह साल डिजाइड करते हैं तो पंद्रह साल के बाद ऐसा क्या होगा जो छोड़ करके फिर मैं वापस भगवान के पास आ जाऊंगा। और इस प्रेम की गंगा में नहाता रहूँ। उसके सानिध्य का सुख प्राप्त करूँ। और इसीलिए उस डेथ का कारण भी मैं ही फाइनलाइज करता हूँ। ये सब फाइनलाइज करने के बाद मैं जन्म लेता हूँ। तो जन्म और मृत्यु को कोई टाल नहीं सकता। दूसरा जो जीवन साथी है, उस जीवन साथी का चयन भी हमने खुद किया है, क्योंकि उसके साथ जो अकाउंट है उसे सैटल करने के लिए। इसीलिए ये सबकुछ हमारे द्वारा ही फाइनलाइज होता है। भगवान का इसमें कहीं भी हाथ नहीं है। अपने कर्म के आधार से ही जब फाइनलाइज

- शेष पेज 6 पर

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - डॉ. कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,

पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,

Email-omshantimedia@bkiiv.org

सदस्यता शुल्क - भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,

आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)

कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या

बैंक ड्राफ्ट (पेबल एट तलहटी, आबू रोड) द्वारा भेजें।





मम्मा ने बड़े ही सहज और सरलता से समझाई ज्ञान की गहराई

ब्र.कु. निर्वैर, ब्रह्माकुमारीज महासचिव, माउण्ट आबू

“

मम्मा जिस विषय को उठाती थीं उसकी अत्यन्त गहराई में चली जाती थीं। विशेष, उन दिनों में मम्मा कर्म के ऊपर बहुत विस्तार से और गहन रूप से समझाती थीं। परमात्मा के परिचय के बारे में तथा पवित्रता की धारणा के ऊपर भी बहुत गहराई से समझातीं। गहराई के साथ समझाने की विधि बहुत सरल, सहज और रमणीक होती थी। सुनने वालों को धारण करना कठिन नहीं लगता था। सचमुच, सुनने वाले को लगता था कि वे विद्या की देवी सरस्वती हैं और उनकी विद्या से उनका जीवन धारणा रूपी धन से सम्पन्न हो रहा है।

”

मम्मा की धारणा बहुत उच्च कोटि की थी। मम्मा बोलती बहुत कम थीं। केवल क्लास में या किसी से व्यक्तिगत रूप में मिलते समय ही हम उनकी आवाज सुनते थे। परमात्मा की याद में लवलीन रहने की उनकी एक स्वाभाविक स्थिति होती थी। उनके आस-पास के प्रकम्पनों से जो अपनेपन का अनुभव होता था वह बहुत सुखद प्रतीत होता था। उनके हर शब्द में ज्ञान समाया रहता। यूँ कहें, उनके रोम-रोम में ज्ञान समाया हुआ था। उनको देखते ही परमात्मा की याद में हमारा मन मग्न हो जाता था। याद करने की मेहनत नहीं करनी पड़ती थी। परमात्मा पिता की याद सहज आती थी।

कर्म के बन्धनों और लौकिक सम्बन्धों से मुक्त करने वाले वरदानी बोल

जब मैं भारतीय नौसेना में था तो छुट्टियों में बाबा ने दो महीने के लिए सेवार्थ जयपुर भेजा था। ईश्वरीय सेवा में मुझे बहुत आनन्द आया। मैंने आकर मम्मा को सारा सेवा समाचार सुनाया। फिर मम्मा से कहा, मम्मा, मेरा दिल कर रहा है कि मैं इस ईश्वरीय सेवा में लग जाऊँ। मम्मा ने मुझे अति उत्साहवर्धक सलाह दी, “यह तो बहुत खुशी की बात है। मनुष्य को चाहिए क्या, खाने के लिए दो रोटी और पहनने के लिए दो जोड़ी कपड़े, वो यज्ञ से मिल जायेंगे। भले ही, आप अपना और दूसरों का कल्याण करो।” मम्मा के ये प्रेरणादायक बोल, अपने सर्व लौकिक बन्धनों को प्यार से चुका कर मुक्त होने में मेरे बहुत मददगार साबित हुए। मम्मा के साथ की वो बैठक, वो रूहिरहान मेरे जीवन के लिए एक अमूल्य निधि है। मुझे बहुत गर्व है कि ईश्वरीय सेवा में पूर्णरूपेण समर्पित होने के लिए मेरी प्रेरक और सहायक शक्ति मम्मा ही थीं।

उनके लिए इस पुरानी दुनिया का कोई अस्तित्व नहीं था

मुम्बाई में मम्मा 2-3 बार आयीं। प्रथम प्रदर्शनी के चित्र सन् 1964 में तैयार हो रहे थे। उनके बारे में मम्मा कुछ सुझाव देने की सेवा के हिसाब से आयीं थी। उस समय की एक घटना मुझे याद आ रही है। एक बार रमेश भाई की कार में हम जा रहे थे। पीछे की सीट पर मम्मा, जमुना दादी और सामने वाली सीट पर मैं और रमेश भाई बैठे थे। हम वाटरलू मेन्सन से रमेश भाई के घर की तरफ जा रहे थे। चौपाटी होकर जाना पड़ता है।

बारे में हमने मम्मा से पूछा, “मम्मा, वह चित्र आपको कैसा लगा?” मम्मा ने तब हमें ऐसा उत्तर दिया कि वह हमारे संकल्प और सपने में भी नहीं था! मम्मा ने कहा, “जिस समय मम्मा क्लास में आती है उस समय ही सामने दृष्टि डालती है, नहीं तो मम्मा के लिए इस दुनिया का कोई अस्तित्व नहीं है।” इतना वैराग्य था मम्मा का इस पुरानी दुनिया और दुनियावी वस्तुओं से!

अनुपम कुशल संगठक और प्रशासक

मम्मा में संगठन करने की शक्ति बहुत श्रेष्ठ और जबरदस्त थी, सबको साथ लेकर चलने की कुशल कला थी। उनमें व्यक्तिगत धारणायें थीं, उदाहरणार्थ बाबा ने कहा और मम्मा ने धारण किया- इसमें नम्बर वन थीं। सहज रूप से माँ के जो संस्कार होते हैं वे उनके अन्दर पूर्णरूपेण थे। समर्पित होने का उनका वह तरीका, जिसको झाटकू कहते हैं, कई भाई-बहनों के लिए एक आदर्श बना, बहुतों के जीवन उद्धार का प्रेरणा-स्रोत बना। सबसे बड़ी बात है कि उनको सबने यज्ञमाता के रूप में स्वीकार कर लिया था। उनको देखते ही हरेक को स्वाभाविक रूप से माँ की भासना आती थी। उन्होंने हरेक की जरूरतों को बिना मांगे पूरा किया। किसी को कोई वस्तु माँगने का अवसर ही नहीं दिया। कभी किसी ने यह नहीं सोचा कि इनकी उम्र क्या है, मेरी उम्र क्या है। किसी धर्म, जाति, पंथ वाला हो, हरेक ने यही बेहद का अनुभव किया कि यह मेरी माँ है, मेरी हितचिन्तक है। उस महान आत्मा में इतनी शक्ति थी! इसलिए, ड्रामा कहिये या बाबा कहिये उनको ही यज्ञमाता, मातेश्वरी, मम्मा बनाया गया।



चौपाटी पर एक विज्ञापन का बोर्ड लगा हुआ था रोजर ट्रिक्स (रोजर कंपनी का पेय) का। एक बोतल थी उसमें से पेय नीचे गिलास में गिरता था तो वो बोतल खाली होती थी, फिर वो बोतल भर जाती थी और वह पेय नीचे गिलास में गिरता था और बोतल खाली होती थी। इस प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक विज्ञापन बना हुआ था। रमेश भाई और हमारे बीच में बातचीत हो रही थी कि हम भी ऐसा एक ज्ञानयुक्त चित्र बनायें प्रदर्शनी के लिए। इसके

की जरूरतों को बिना मांगे पूरा किया। किसी को कोई वस्तु माँगने का अवसर ही नहीं दिया। कभी किसी ने यह नहीं सोचा कि इनकी उम्र क्या है, मेरी उम्र क्या है। किसी धर्म, जाति, पंथ वाला हो, हरेक ने यही बेहद का अनुभव किया कि यह मेरी माँ है, मेरी हितचिन्तक है। उस महान आत्मा में इतनी शक्ति थी! इसलिए, ड्रामा कहिये या बाबा कहिये उनको ही यज्ञमाता, मातेश्वरी, मम्मा बनाया गया।



दिल की बात

परमपिता परमात्मा हम आत्माओं को अपने ही अंतर्मन को टटोलने और कर्मातीत बनने की श्रीमत्त देते हैं। देखना है कि बाहर सफेदपोशी और भीतर काली विकारी ठगी तो नहीं चल रही है? कर्मेन्द्रियजीत बने हैं या अभी तक मात खाये जा रहे हैं? स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों के धोखे में आत्मा अपने राजाई पद से लुट पिट कर, दासत्व को तो नहीं पा रही? मायावी मेनका देख आपकी तपस्या पर कुल्हाड़ी तो नहीं चला रही? तो अब हमें आत्मावलोकन करना है। सच्चे दिल से अपने आपसे वायदा करना है कि अब यह कर्मेन्द्रियाँ धोखा नहीं दे सकती, अकेले में खुद से बात करनी है, इन कर्मेन्द्रियों के विकारी सम्मोहन में, मुझ आत्मा की बहुत दुर्गति हुई है, और जन्मों के गहरे दुःख भोगे हैं, लेकिन अब श्रीमत्त पर चलना है। और इसे नियंत्रण करना है, सबसे ज्यादा आँखें विचलित कर मन बुद्धि को गुमराह करती है, जिस पर पैनी नजर रखनी है। परमात्मा ने तमोप्रधानता की उस चरमसीमा का जिक्र किया है, जिससे आत्मा को दैहिक बदबू भी खुशबू की भाँति मोहित करती है और भगवान को पाकर भी देह कीचड़ में ही फिसलती है। रथी ही यूँ कर्मेन्द्रियों संग बाँवरा होकर भाग रहा है तो राज्य का तो सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि जहाँ बाप नहीं वहाँ पवित्रता नहीं तो पाप ही होता है। इसलिए सच्चा ब्र.कु. बनना है। गृहस्थी बन बंधन के जाल नहीं बनाने हैं, ट्रस्टी-सा मस्त उड़ना है। हर कर्मेन्द्रियों की सच्ची रिपोर्ट बाबा को देकर उबरने की शक्ति को पाना है। ज्यों ही आत्मा देही अभिमानी हो अपनी सीट पर विराजमान होती है, बाबा के दिल के बेहद करीब होकर सर्व शक्तियों और सिद्धियों से भर जाती है। जो आत्मा दैहिक सम्बन्धों के पीछे अपना ताज, तख्त, शान, वजूद सब कुछ गंवा कर कंगाल बन जाती है। क्या वह बाबा के प्यार में देहभान को छोड़ नहीं सकती? जो उसे सर्व भाग्य से मालामाल कराता है, यह गहराई से सोचना है। जितना दिल, शुभ इच्छा व निःस्वार्थ भावों से भरा होगा उतना वह शांत, शीतल और क्रोध मुक्त होगा।



आगरा-सिकंदरा(उ.प्र.)। 85वीं त्रिमूर्ति शिवजयंती पर कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए मेयर नवीन जैन, पार्षद सुषमा जैन, डॉ. पिकी, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. आशु, ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।



खरगोन-म.प्र.। कोविड-19 बीमारी के चलते ऊर्जा मंत्री हरदीप सिंह डांग को जिला चिकित्सालय के लिए 150 पी.पी.ई. किट भेंट करते हुए ब्र.कु. देवकन्या एवं ब्र.कु. मनीषा। साथ हैं सांसद गजेन्द्र सिंह पटेल एवं पुलिस अधीक्षक शैलेन्द्र सिंह।



भीनमाल-राज.। कोविड महामारी में एस.डी.एम. के द्वारा राजकीय चिकित्सालय के कोविड मरीजों के लिए ब्र.कु. गीता दीदी ने कोविड की दवाइयाँ, इंजेक्शन, पी.पी.ई. किट, फ्रूट्स प्रदान किए।



गुआंगजौ-चाइना। ब्रह्माकुमारीज की ओर से इंडियन कांसेलेट के कॉन्फ्रेंस हॉल में मेडिटेशन सीरीज का 'फेसिंग चैलेंजेस ऑफ अनसर्टेनिटी' विषय पर शुभारम्भ किया गया। ब्र.कु. सपना ने ऑनलाइन ही मेडिटेशन के लिए गाइड किया। कार्यक्रम में लगभग 80 भाई-बहनें उपस्थित रहे।



न पद का मद, न ही मर्यादा का उल्लंघन, मातृवत् से किया कुशल प्रशासन

अपनी कुशाग्र बुद्धि, व्यक्तियों की परख, प्रेम, मर्यादा पालन, नियमित विद्यार्थी जीवन तथा अथक सेवा के कारण वे एक कुशल प्रशासिका भी थीं। इसलिए सन् 1951-52 से लेकर (जब से ईश्वरीय सेवा प्रारम्भ हुई) सन् 1961 तक वे कन्ट्रोलर अथवा प्रशासन-अभियन्ता एवं नियंत्रक नियुक्त थीं और जनवरी सन् 1969 में प्रजापिता ब्रह्मा के अव्यक्त होने के बाद पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी के साथ दीदी मनमोहिनी अतिरिक्त प्रशासिका के तौर पर सेवारत थीं। यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है कि 14 वर्षों तक दादी और दीदी दोनों ने मिलकर इस प्रकार प्रशासन कार्य किया कि कभी उनमें मन-मुटाव नहीं हुआ, न कभी उन्होंने एक-दूसरे की आलोचना की। वे कहा भी करतीं कि हम दोनों के शरीर अलग-अलग हैं परन्तु आत्मा एक है। उनके इस मंतव्य और घनिष्ठ स्नेह को देखकर लोग दंग रह जाते, इन दोनों के कुशल प्रशासन में, परमपिता परमात्मा शिव के प्रशिक्षण एवं संरक्षण में ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने दिन दुगुनी और रात चौगुनी उन्नति की जिसके फलस्वरूप, सन् 1983 से पहले ही इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विश्वभर में लगभग 1150 सेवाकेन्द्र थे।

प्रशासनिक कुशलता

दीदी जी के जीवन में अनेक दिव्यगुण अपनी चरम उत्कर्ष पर थे। वे 72 वर्ष की आयु में भी आश्चर्यचकित कर देने वाली स्फूर्ति और चेतना के साथ काम करती थीं। मधुबन में देश के कोने-कोने से तथा विदेशों से, हजारों भाई-बहनें आते थे तो उनका कार्य-उत्तरदायित्व इतना बढ़ जाता था कि एक अच्छे युवक या युवती के लिए भी सम्भालना कठिन था परन्तु उन्होंने एक तो सारी व्यवस्था को दादी जी के साथ मिलकर ऐसा बना रखा था कि कार्य सुचारू रूप से, झंझट और झड़प के बिना चलता रहता था और दूसरे वे स्वयं कार्य-प्रवाह से परिचित एवं सूचित रहती थीं तथा ध्यान देती थीं।

प्रातः ही वे सारे मधुबन का एक बार भ्रमण कर लेती थीं और भण्डारे आदि में, जहाँ-कहीं भी

उनके परामर्श की आवश्यकता होती, वे राय दे आती थीं। उनकी कार्य लेने की विधि भी ऐसी थी कि सभी उनसे सन्तुष्ट रहते थे। वे उनकी कठिनाईयों को भाँप कर उन्हें वाञ्छित हल देती थीं और उनमें कठिनाईयों को पार करने के लिए

थे कि प्रशासन सीखना हो तो इनसे सीखना चाहिए। फरवरी, 1983 में मधुबन में बड़ा सम्मेलन हुआ, तब दादी प्रकाशमणि जी और दीदी मनमोहिनी जी के संरक्षण में तीन हजार व्यक्तियों के ठहरने, भोजन करने तथा सब प्रकार

ने तन-मन-धन से सहयोग देकर इतने बड़े कार्य को सहज ही सफलता से पूरा कर लिया और वह भी योगयुक्त अवस्था एवं शान्ति से।

त्यागमय जीवन

दीदी जी यद्यपि एक बहुत ही धनवान घराने में पैदा हुई थीं तथापि यज्ञ में उनकी वेष-भूषा, खान-पान तथा रहन-सहन अन्य सभी की तरह अत्यन्त सादा और साधारण था। उन्होंने कभी भी अपने लौकिक कुल के धन-धान्य के बारे में गर्व नहीं किया। उन्होंने अपने लौकिक जीवन के सुखों को कभी भी याद नहीं किया। इस प्रकार, वे सादगी और त्याग की मूर्ति थीं। उनके पास जो चीजें होतीं, वे दूसरों को ही सौगात देकर प्रभु-प्रेम में बाँधतीं। उन वस्तुओं को अपने लिए प्रयोग नहीं करती थीं।

नम्रचित

दीदी मनमोहिनी जी, दादी प्रकाशमणि जी के साथ मिलकर एक बहुत बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का कार्य-संचालन करती थीं। अतः उत्तरदायित्व के साथ उन्हें काफी अधिकार भी प्राप्त थे। परन्तु उन्होंने कभी भी किसी से अधिकार या सत्ता के मद (अहंकार) में नहीं बोला। बल्कि यदि कभी किसी ने मार्यादानुसार व्यवहार नहीं किया, तब भी उन्होंने उसे मातृवत् प्रेम ही दिया ताकि वह ईश्वरीय ज्ञान के मार्ग से पीछे न हट जाए। यदि कभी कोई किसी कारण से रुष्ट भी हो गया तो भी उन्होंने स्वयं झुककर उसे स्नेह और सौहार्द से सींचा ताकि शिव बाबा के साथ उस आत्मा का बुद्धियोग बना रहे और वह देहधारी आत्माओं से रूठकर योगमार्ग से विचलित न हो जाये। उन्होंने कभी यह हठ नहीं किया कि “गलती अमुक व्यक्ति की ही है, अथवा दोष उसी का ही है और इसलिए मैं उससे क्यों बात करूँ?” बल्कि स्वयं दीदी जी ने ही उसके मन को शीतल करने के लिए कहा कि “भाई, मन में कोई बात हो तो निकाल दो, हम सभी एक मार्ग के राही हैं। दैवी परिवार में आत्मिक सम्बन्धी हैं और हमारे मन में आपके लिए शुभ भाव ही है।” इस प्रसंग में यह कहना उचित होगा कि दीदी जी को बच्चों का यह गीत – “हम हैं आत्मा, तुम हो आत्मा, आपस में भाई-भाई, बाबा कहते पढ़ो पढ़ाई, नहीं किसी से लड़ो लड़ाई”, अच्छा लगता था।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि दो महिला एक साथ, एक ही कार्य के लिए निमित्त हों और उनमें मन-मुटाव या कलह-कलेश ना हो, क्या ये हो सकता है! हाँ, हम ऐसी दो महान महिलाओं के बारे में, जो एक ही प्रशासनिक कार्य पर नियुक्त होने पर भी प्रैक्टिकली वे एक आदर्श के रूप में दुनिया के सामने उदाहरण रूप बनीं। जो थीं तो दोनों अलग-अलग परन्तु जिन्होंने उन्हें नज़दीक से देखा वे कहते हैं कि शरीर भले दोनों के अलग-अलग थे परन्तु आत्मा एक थी। उनकी कार्यप्रणाली ही प्रमाण है जो उनके नेतृत्व में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने दिन दुगुनी, रात चौगुनी तरक्की की वो भी बिना किसी ईर्ष्या या मन-मुटाव के।



प्रेरणा भरती थीं। यही कारण है कि मधुबन में जो भी वरिष्ठ सरकारी अधिकारी आते या बड़े उद्योगों के व्यवस्थापक आते, वे दीदी जी तथा दादी जी दोनों से मिलते समय यह अवश्य कहते कि यहाँ की व्यवस्था देखकर उन्हें बहुत अच्छा लगा। न कोई कोलाहल, न आहट, न तनाव, न कार्य का ठहराव। शान्ति, परस्पर प्रेम तथा सेवाभाव से सुचारू कार्य देखकर सभी कहते

की सहूलियतें मिलने का और साथ-साथ सम्मेलन तथा योगादि का कार्य ऐसा शान्तिपूर्ण चला कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के लोगों ने भी इसकी प्रशंसा की। इसी प्रकार, इतने बड़े ओम् शान्ति भवन के इतने अल्पकाल में निर्माण होने की बात भी सभी के लिए एक मधुर आश्चर्य बन गया। वास्तव में, यह दोनों के मधुर व्यक्तित्व एवं प्रशासन-कुशलता का प्रभाव ही था कि सभी

कौन करता...

- पेज 4 का शेष

किया गया था तब वो बहुत शुद्ध अवस्था में था। और इसीलिए न्याय करता है अपने कर्मों के साथ। इसीलिए फिर उनसे पूछा गया कि ये सब बातें तुमको कब तक याद रहती हैं? कहा 2 साल तक तो मुझे अच्छे से सारा याद रहता है कि मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है, किसलिए मैं यहाँ आया हूँ! लेकिन जैसे ही मेरी वाचा खुलती है, वाचा खुलने के बाद फिर धीरे-धीरे विस्मृत हो जाता हूँ। और फिर विस्मृत होकर मुझे पता नहीं चलता है कि क्या मैंने फाइनलाइज किया था। और इसीलिए जब हमारे सामने वो डेस्टिनी आती है तो हम दुःखी भी हो जाते हैं, परेशान भी हो जाते हैं। हम कभी-कभी भगवान को भी दोषी मान लेते हैं। क्योंकि हम भूल जाते हैं कि मैंने ही ये फाइनलाइज किया था। ये रिसर्च, विज्ञान के द्वारा स्पष्ट हुई है।



जमैका-अमेरिका। ब्रह्माकुमारीज के ब्र.कु. भारती दीदी ने मोंटैगो बे के मेन स्ट्रीट रोज हॉल में ज्ञान चर्चा के लिए गवर्नमेंट ऑफिशियल, एंड्रयू विंटर, सी.ई.ओ. ऑफ पी.आई.सी.ए., लीरोय विलियम्स, मेयर ऑफ मोंटैगो बे, पैरिश कार्डसिल, सेंट जेम्स, रिचर्ड वेनॉन, डेप्युटी मेयर ऑफ मोंटैगो बे, पैरिश कार्डसिल, सेंट जेम्स, लेनोक्स वालिस, सी.ई.ओ. ऑफ वेस्टर्न हेल्थ अथॉरिटी, विंस्टन डियर, चेयरमैन ऑफ अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन, बिशप कॉनराड पिटकिन, कस्टोस ऑफ सेंट जेम्स, होमर एडवर्ड डेविस, मिनिस्टर ऑफ स्टेट इन लॉकल गवर्नमेंट एंड रूरल डेवलपमेंट, कैरोन बेंजामिन, जनरल मैनेजर ऑफ कन्वेंशन सेंटर, मोंटैगो बे के साथ-साथ डॉक्टर्स और बिजनेसमैन को भी आमंत्रित किया।

मियामी-

फ्लोरिडा (यू.एस.ए.)।

ब्रह्माकुमारीज की ओर से ब्र.कु. तेज द्वारा फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स के लिए ऑनलाइन सेशन का आयोजन किया गया। जिसमें यूनिवर्सिटी के इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट से

डॉ. प्रियंका अल्लूरी को 'हाईवे ज्योमेट्री डिजाइन' क्लास के लिए आमंत्रित किया। ब्र.कु. तेज ने मानसिक स्वास्थ्य और सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के तरीकों को साक्षा किया। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे हमारी चेतना हमारे चारों ओर की दुनिया का निर्माण करती है और मन की अच्छी स्थिति बनाए रखने के लिए 'ट्रैफिक कंट्रोल ऑफ द माइंड' स्परिचुअल टूल का क्या महत्व है।



आसिका-तपस्याधाम (ओडिशा)। लॉकडाउन के समय जरूरतमंदों को स्थानीय प्रशासन के माध्यम से भोजन व जल प्रदान करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लिली तथा अन्य।



ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

जानें मन के समीकरण

जिसके बारे में हमें पता ही नहीं था कि ऐसा भी कुछ होता है। ये शायद पहली ऐसी घटना है जिसने एक ही समय पर पूरे विश्व को प्रभावित किया है। अभी तक हम समझ भी नहीं पा रहे हैं कि इसका हरेक के मन पर कितना प्रभाव पड़ा है। परिस्थिति ये है कि वो ट्रैफिक जाम था, आज ये वायरस है। दोनों चीजें परिस्थिति हैं। ये परिस्थिति हमारे बाहर हैं। और मन की स्थिति अंदर है। जो समीकरण हम जीवन में बहुत सालों से लेकर चल रहे हैं, जिसकी वजह से ये चिंता और डर बढ़ा हुआ है। वो समीकरण था, जैसी परिस्थिति होगी वैसी मन की स्थिति होगी। जब इतनी बड़ी समस्या है तो डिस्टर्ब

जीवन में बहुत सारी चीजें ऐसी हैं जिन्हें हम अच्छी तरह से समझते हैं। लेकिन मुश्किल तब होती है जब चीजें अनजान होती हैं। ऐसी मुश्किल घड़ी में हमें करना क्या है ये जानना बहुत जरूरी होता है। पिछले कुछ दिनों में जो कुछ भी हम अपने आस-पास देख रहे हैं, वो कुछ ऐसी ही मुश्किलताएं हैं। जहाँ पर हम नहीं जानते हैं कि हमें करना क्या है। अक्सर बीमारी अकेली नहीं होती है। बीमारी के साथ, मृत्यु के साथ भय होता है। आज भी हमारे आस-पास एक ऐसा ही माहौल बनता जा रहा है। भय और डर जो बहुत ज़्यादा हमारे ऊपर हावी होता जा रहा है।

जीवन में कुछ बातें ऐसी होती हैं जो हमें अच्छी नहीं लगती हैं, जैसे घर में किसी की मृत्यु, किसी की नौकरी छूटना, असफलता, किसी के रिश्ते टूटना। ये हम अपने आस-पास होते देख रहे हैं। तो भी हमें लगता है कि यह हमारे साथ नहीं होगा। फिर अचानक हमारे जीवन में कोई ऐसी बात आती है तो हम उसका सामना नहीं कर पाते हैं। हम विश्वास करते हैं कि परिस्थिति ही ऐसी है, तो मन की स्थिति पर असर पड़ेगा ही। आप घर से निकलते हैं तो आपको पता है कि ट्रैफिक जाम होता है। ट्रैफिक जाम होना एक वास्तविकता है। तो भी हम उसमें चिड़चिड़ाते हैं। मतलब जो परिस्थिति हमें पता है, तब भी हम उसमें परेशान होते हैं। अब हमारे पास एक ऐसी परिस्थिति आई है

जो समीकरण हम जीवन में बहुत सालों से लेकर चल रहे हैं, जिसकी वजह से ये चिंता और डर बढ़ा हुआ है। वो समीकरण था, जैसी परिस्थिति होगी वैसी मन की स्थिति होगी। जब इतनी बड़ी समस्या है तो डिस्टर्ब होना नॉर्मल है। तनाव होना तो नॉर्मल है। डर का पैदा होना तो नॉर्मल है।

होना नॉर्मल है। तनाव होना तो नॉर्मल है। डर का पैदा होना तो नॉर्मल है। तो हमने नकारात्मक भावनाओं को नॉर्मल कह दिया। हमने कहा जितनी बड़ी परिस्थिति तो उतना ज़्यादा तनाव और चिंता होना नॉर्मल है। ऐसा कहते-कहते हम शायद बचपन से जी रहे हैं और शायद विश्व के सारे लोग इसी विश्वास के साथ जी रहे हैं। कोरोना की परिस्थिति में शांत, स्थिर, निडर रहना जरूरी है। आज उस समीकरण को फिर से जांचने

की आवश्यकता है। परिस्थिति बाहर है, मन की स्थिति मेरी है। परिस्थिति मन की स्थिति नहीं बनाती। मन की स्थिति का प्रभाव परिस्थिति पर 100 प्रतिशत पड़ता है, यह याद रखें। इसके लिए सबसे पहले अपनी भाषा बदलेंगे। यानी सोचने की, बोलने की शब्दावली। हम ये नहीं कह सकते कि यह होना ही है। जैसे इतने दिनों से हम सीख रहे हैं इस वायरस से अपने परिवार को, देश को और विश्व को बचाने के लिए हमें क्या-क्या करना है। लेकिन हमने ये नहीं सोचा कि इससे खुद को बचाने के लिए मन के अंदर क्या करना है। हमने सोचा कि वायरस फिजिकल है तो हेल्थ पर असर पड़ेगा। बीमारी, मृत्यु और डर के बारे में सोच रहे हैं, बोल रहे हैं और एक-दूसरे से शेयर कर रहे हैं। तीसरा डर हमने कहा कि वो तो प्राकृतिक है। क्योंकि हमने ये सोचा ही नहीं कि ये भी हमारे हाथ में है और इसके बारे में भी हम कुछ कर सकते हैं।

वायरस का भय हमारे अन्दर पहले से है, सामने वाले के अंदर भी है। घर में बैठे हुए चार लोगों के अंदर है। देश के 130 करोड़ लोगों के अंदर है। विश्व की जितनी आबादी है उसके अंदर है। क्या ये डर भी कुछ कर सकता है? डॉक्टर्स हमें ये बता रहे हैं कि डर हमारे इम्युनिटी सिस्टम को प्रभावित करता है। ये डर हमने आज नहीं बनाया है। ये डर तो हमारे जीवन का वैसे भी हिस्सा था। लेकिन पहले हम कभी-कभी डरते थे। अब तो ये बीमारी किसी को भी हो सकती है। लेकिन इम्युनिटी सिस्टम आज हम जांचें। इम्युनिटी सिस्टम शरीर की आयु पर नहीं है बल्कि मन की स्थिति पर निर्भर करता है। हम जो विचार पैदा कर रहे हैं, उसका असर कितना पड़ रहा है। ये अगर हम ध्यान रखें तो हम बहुत सारी बीमारियों से बच सकते हैं।

एक नई सोच

व्यवहार की भूमिका

आज का इंसान व्यवहार को नज़रअंदाज करता जा रहा है। जबकि व्यवहार हर एक के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है अर्थात् एक व्यवहार जहाँ किसी के दिमाग को छूता है, वहीं दूसरा व्यवहार हर एक के दिल को छू जाता है।

अतः जब तक किसी का व्यवहार दिल को न छू जाए, उससे अपनापन महसूस नहीं हो सकता। और न ही वो इंसान किसी के दिल में अपनी जगह बना सकता है। परिणाम स्वरूप वो अपने जीवन में खालीपन महसूस करता है। फिर उस खालीपन को भरने के लिए किसी न किसी के संग अथवा कुछ न कुछ काम करने की कोशिश करता रहता है।

जब तक उसे वह चीज़ें मिलती रहती हैं, उसका जीवन सहजता से चलता रहता है, और उन चीज़ों के हटते ही जीवन में असहजता आ जाती है। अतः जब तक हम अपने खालीपन को बाहरी तथ्यों से भरते रहेंगे तब तक हमारा भरपूर होना संभव नहीं हो सकता, अर्थात् भरपूरता के लिए अपने व्यवहार को अच्छा और श्रेष्ठ विचारों से खुद को भरपूर करना अति आवश्यक होता है।



महेश्वर-म.प्र. विष्णु हॉस्पिटल में ब्र.कु. अनीता बहन ने कोरोना पेशेंट्स, डॉक्टर्स व स्टाफ को आध्यात्मिक और प्रेरणादायक बातें बताकर उमंग-उत्साह दिलाया। तत्पश्चात डॉ. हेमंत सोनी, डॉ. मदनलाल सोनी तथा डॉ. गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट की।



मोहाली-पंजाब। नवनिर्वाचित अमरीक सिंह सोमल सीनियर डेप्युटी मेयर, म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन का फूलों के गुलदस्ते से स्वागत करने के पश्चात साथ हैं ब्र.कु. करमचंद भाई, ब्र.कु. जसबीर सिंह तथा ब्र.कु. राजिंदर भाई।



घाटकोपर-मुम्बई। कोविड-19 बीमारी के चलते ब्र.कु. नलिनी दीदी के नेतृत्व में नेत्रहीन लोगों में आवश्यक सामग्री वितरित करते हुए ब्र.कु. सरस्वती बहन तथा अन्य भाई-बहनें।



सेंट पीटर्सबर्ग-रशिया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ऑनलाइन विडियो के माध्यम से मिस्टर अलेक्जेंडर रेज़नकोव, चेयरपर्सन ऑफ सोशल पॉलिसिस कमिटी, सेंट पीटर्सबर्ग एडमिनिस्ट्रेशन, व्यबोर्गस्की डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन हेड वालेरी गार्नेट्स, कौंसल जनरल ऑफ इंडिया, सेंट पीटर्सबर्ग दीपक मिगलानी ने महिलाओं की सराहना करते हुए अपने विचार रखे और चित्र में हैं ब्र.कु. संतोष दीदी तथा अन्य।

यह जीवन है...

परसनालिटी आपकी कैसी है, यह महत्वपूर्ण नहीं है। मेंटालिटी आपकी कैसी है, यह ज़्यादा महत्वपूर्ण है। हमें हमेशा ये बात याद रखनी है कि आलोचना करने वालों का भी आदर करना चाहिए, क्योंकि आपकी अनुपस्थिति में वो आपका नाम चर्चा में रखते हैं अर्थात् आपको याद तो रखते हैं ना!

इसलिए, ना बीती बातों का चिंतन कीजिए और ना ही आने वाले कल की चिंता कीजिए।

बस सभी के लिए अच्छी सोच रखिए, अच्छा व्यवहार कीजिए, मीठे बोल बोलिए।

सभी को सुख देने, खुशी देने वाले श्रेष्ठ कर्म कीजिए। और अपने वर्तमान को अच्छे से अच्छा बनाने की मेहनत कीजिए। जिससे आपके भूत और भविष्य दोनों अपने आप श्रेष्ठ हो जायेंगे।



धनबाद-झारखंड। इंडियन मीडिया काउंसिल की ओर से ब्र.कु. अनु को उनकी प्रतिभा और समर्पणता को देखते हुए ‘द ग्लोबल युमेन अचीवर्स फेस्टिवल 2021 अवॉर्ड’ से सम्मानित किया गया।



शाहगढ़-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज व तहसील प्रेस क्लब के तत्वाधान में आयोजित मीडिया सम्मेलन के पश्चात् ब्र.कु. शैलजा दीदी,छतरपुर को शॉल ओढ़ाकर व मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए प्रकाश जैन,अध्यक्ष तहसील प्रेस क्लब, मनीष जैन,सचिव तहसील प्रेस क्लब, हुकुमचंद जैन,वरिष्ठ पत्रकार, बुजेश गुप्ता,दैनिक जागरण, संदीप जैन,साधना न्यूज, सुनील तिवारी,टीवी न्यूज तथा साथ हैं ब्र.कु. माधुरी,छतरपुर,पन्ना नाका।

कथा सरिता

खोदना है, अन्यथा सारी मेहनत व्यर्थ चली जायेगी। राजा अगले दिन

और आज मुझे तुम्हारी इस दशा पर बड़ी हँसी आ रही है। तुम कितने भी महल या घर बना लो, पर तुम्हारा अंतिम महल, घर यही है। एक दिन तुम्हें इसी मिट्टी में मिलना है।

सावधान राहगीर, जब तक तुम मिट्टी के ऊपर हो तब तक आगे की यात्रा के लिये तुम कुछ जतन कर लेना, क्योंकि जब मिट्टी तुम्हारे ऊपर आयेगी तो फिर तुम कुछ भी न कर पाओगे। यदि तुमने आगे की यात्रा के लिए कुछ जतन न किया तो अगले जन्म में तुम क्या लेकर जाओगे? ये मत भूलना कि तुझे भी एक दिन इसी मिट्टी में मिलना है बस तरीका अलग-अलग है। फिर राजा जैसे-तैसे कर के उस कुएँ से बाहर आया और अपने राजमहल गया। उस शिलालेख के उन शब्दों ने उसे झकझोर के रख दिया और सारे

राहगीर के लिए सूचना

अकेले ही आया और अपने हाथों से खोदने लगा और बड़ी मेहनत के बाद उसे वो शिलालेख मिला और उन शब्दों को जब राजा ने पढ़ा तो उसके होश उड़ गये और सारी अक्ल ठिकाने आ गई। उस पर लिखा था कि राहगीर, संसार के सबसे भूखे प्राणी शायद तुम ही हो

एक सौदागर राजा के महल में दो गायों को लेकर आया - दोनों ही स्वस्थ, सुंदर व दिखने में लगभग एक जैसी थीं।

पहचान नहीं कर पाया। बाद में मुझे किसी ने यह कहा कि आपका बुजुर्ग मंत्री बेहद कुशाग्र

बुद्धि की परख

सौदागर ने राजा से कहा, “महाराज ये गायें माँ-बेटी हैं परन्तु मुझे यह नहीं पता कि माँ कौन है व बेटी कौन है, क्योंकि दोनों में खास अन्तर नहीं है। मैंने अनेक जगह पर लोगों से पूछा किंतु कोई भी इन दोनों में माँ-बेटी की

बुद्धि का है और यहां पर मुझे अवश्य मेरे प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। इसलिए मैं यहाँ पर चला आया - कृपया मेरी समस्या का समाधान किया जाए।” यह सुनकर सभी दरबारी मंत्री की ओर देखने

गया हो, अगर तुम्हें रुपये की आवश्यकता है तो ये रुपये की थैली ले जाओ, और किसी से झगड़ा हो गया हो तो ये तलवार लेकर मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। तब पिता की आँखें भर आईं और उन्होंने अपने मित्र से कहा कि, मित्र मुझे किसी

चीज की ज़रूरत नहीं। मैं तो बस मेरे बेटे को मित्रता की परिभाषा समझा रहा था। ज़िन्दगी में दो मित्र ज़रूर होने चाहिए, एक कृष्ण जो ना लड़े फिर भी जीत पक्की कर दे और दूसरा कर्ण जो हार सामने हो फिर भी साथ ना छोड़े।

मित्रता की परिभाषा



जीरा है आपके स्वास्थ्य के लिए हीरा

सिस्टम बिगड़ जाता है। ऐसे में अगर आप आहार में जीरे को शामिल करें तो पाचन शक्ति में काफी हद तक सुधार हो सकता है। एसिडिटी की समस्या, गैस या अपच से निजात पाने के लिए जीरे के पानी का सेवन कर सकते हैं।

साथ ही तेज पेट दर्द होने पर चीनी और जीरे को थोड़ी देर तक चबाने से पेट दर्द ठीक हो जाता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए

वजन कम कर सकता है। जीरा खाने से हमारा मेटाबॉलिज्म भी सुधरता है। कोलेस्ट्रॉल को भी बैलेंस में रखने के लिए जीरा फायदेमंद है। जीरा पाउडर के सेवन से मोटापे की शिकार महिलाओं का वजन कम होता है।

बोंस को मजबूत करता है जीरा

बोंस की मजबूती के लिए शरीर में पर्याप्त मात्रा में पोटैशियम, कैल्शियम और मैग्नीज का होना बहुत



जीरे में पाये जाने वाले पोषक तत्व

अब जीरा खाने के फायदे जानने से पहले इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्व के बारे में जान लेते हैं, जिनकी वजह से स्वास्थ्य को कई लाभ मिलते हैं। जीरे में पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व और खनिज इसकी गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक है। जीरा एक बेहतरीन एंटी ऑक्सिडेंट है। और साथ ही यह सूजन को कम करने और मांसपेशियों को आराम पहुंचाने में कारगर है। इसमें फाइबर भी पाया जाता है। यह विटामिन सी, विटामिन के, विटामिन बी 1,2,3, विटामिन ई, प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन, कॉपर, कार्बोहाइड्रेट, पोटैशियम, मैग्नीज, जिंक व मैग्नीशियम जैसे मिनरल्स का अच्छा स्रोत भी है। इसलिए इसका सेवन सेहत के लिए फायदेमंद है। जीरा, खाने का जायका बढ़ाने के लिए तो इस्तेमाल किया ही जाता है लेकिन जीरा खाने के फायदे हेल्थ को भी बहुत मिलते हैं।

सेहत के लिए है फायदेमंद

पाचन तंत्र के लिए

सही वक्त पर खाना न खाने और खाने के बाद न टहलने की वजह से गैस, कब्ज और अपच जैसी समस्याएं हो जाती हैं। इसकी वजह से डायजेस्टिव

जीरे में मौजूद विटामिन, और एंटीऑक्सीडेंट शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। जीरे के नियमित सेवन से दिल की बीमारी से बचा जा सकता है। सर्दी-जुकाम जैसी समस्या अगर लगातार होती है तो जीरे का सेवन करना चाहिए। इसमें मौजूद विटामिन सी, इम्यूनोमॉडलट्री गुण और आयरन सर्दी-जुकाम से लड़ने में सहायक होता है और इम्युनिटी को बढ़ाता है।

नींद के लिए

जीरा आपकी अनिद्रा को दूर कर सकता है। दरअसल, जीरे में मेलैटोनिन पाया जाता है जो नींद की समस्या या स्लीप डिसऑर्डर में मददगार साबित होता है। मेलैटोनिन हार्मोन सोने में सहायता करता है।

वजन कम करने में

जंक फूड खाना और व्यायाम न करना आदि कारणों के चलते लोग मोटापे का शिकार हो जाते हैं। अगर आप वजन कम करना चाहते हैं तो जीरा आपका

ज़रूरी है। अगर शरीर में कैल्शियम उचित मात्रा में नहीं होती है तो शरीर हड्डियों से कैल्शियम लेना शुरू कर देता है। कैल्शियम की कमी होने पर जीरे को अपने खाने में ज़रूर शामिल करें। जीरा जहाँ एक ओर खाने का स्वाद बढ़ाता है, वहीं दूसरी ओर जीरा खाने से हड्डियां भी मजबूत होती हैं।

एनीमिया के लिए

एनीमिया की बीमारी का एक बड़ा कारण शरीर में आयरन की कमी है। जीरा आयरन का एक समृद्ध स्रोत है। जिसकी वजह से यह एनीमिया को ठीक करने में उपयोगी होता है। इसमें पाया जाने वाला आयरन रेड ब्लड सेल्स के उत्पादन को बढ़ाता है और थकावट जैसे एनीमिया के लक्षणों को भी कम करता है।

बच्चों के लिए भी लाभकारी जीरा

जिन बच्चों को दस्त की समस्या अक्सर हो जाती है। उनके लिए जीरे का सेवन करना फायदेमंद हो सकता है। आप बच्चे को भूना और पिसा जीरा एक चम्मच

में पानी में घोलकर दे सकते हैं। ऐसा करने से बच्चे को राहत मिलेगी।

मासिक धर्म में फायदे

पीरियड्स के दौरान होने वाली पेट में ऐंठन, मतली, पेट दर्द की समस्या को ठीक करने के लिए जीरा मददगार साबित होता है। साथ ही अनियमित माहवारी की समस्या को भी ठीक करता है। इस अवस्था में कुछ महिलाएं दवाइयां खाती हैं, जो सही नहीं हैं।

त्वचा के लिए जीरे के फायदे

सिर्फ शरीर को ही नहीं बल्कि जीरा खाने के फायदे त्वचा के लिए भी अनगिनत हैं। जीरे में विटामिन ई होता है। क्यूमिन(जीरा) सीड्स के इस्तेमाल से स्किन स्वस्थ और चमकदार बनती है। साथ ही जीरे में कीटाणुनाशक और एंटी फंगल गुण होते हैं। इसकी वजह से एक्जिमा, सोरायसिस की समस्या, फोड़े, फुंसी और अन्य त्वचा विकारों में जीरे का पेस्ट उपयोगी होता है।

बालों के लिए फायदेमंद

बालों की अच्छी सेहत के लिए जीरे को आहार में शामिल करें। इससे हेयर फॉल और डैंड्रफ की समस्या से निजात मिलती है। विटामिन, प्रोटीन और आयरन से भरपूर जीरे को अपने रोज के आहार में शामिल कर सकते हैं।

जीरे के उपयोग से रूसी से भी छुटकारा पाया जा सकता है। इसे आप अपने तेल में थोड़ा गर्म करके, इस गुनगुने तेल से सिर पर मसाज कीजिए और रूसी से छुटकारा पा लीजिए।

जलन में दे राहत

अगर आपको हथेलियों में कुछ गर्मी महसूस हो रही हो तो जीरे को पानी में उबालकर ठंडा करके प्यास लगने पर पी लीजिए। अगर आप हर बार गुनगुना जीरा पानी पी सकें तो फायदा दुगुनी तेजी से होगा।

जीरे के अत्यधिक इस्तेमाल से होने वाले नुकसान

यदि आपको जीरे से एलर्जी है या पहली बार जीरे का सेवन कर रहे हैं तो सावधानी बरतें। इससे त्वचा पर रेशेज या एजली हो सकती है।

जीरा खाने से ब्लड शुगर कम हो सकता है। अगर आप डायबिटीज के शिकार हैं तो जीरे का इस्तेमाल संतुलित मात्रा में करें।

हालांकि, मासिक धर्म के दौरान जीरा खाने के फायदे होते हैं लेकिन ज़्यादा मात्रा से ब्लीडिंग ज़्यादा हो सकती है।

जीरे का ज़्यादा इस्तेमाल सीने में जलन, लिवर और किडनी की समस्या दे सकता है।



छत्तरपुर-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर शहर के ऑडिटोरियम में भा.ज.पा. महिला मोर्चा की मातृ शक्तियों अर्चना सिंह, पूर्व अध्यक्ष नगरपालिका, पुष्पा शशि सिंह, प्राचार्या क्र. 2, अंजू लोधी, नायब तहसीलदार, कोमल सिंह, एस.आई. थाना सिविल लाइन, प्रवीणा द्विवेदी, वरिष्ठ अधिवक्ता, दिप्ती प्यासी, सक्रिय युवा समाजसेवी, सरोज बहन, अधिवक्ता का.ब्र.कु. रमा, ब्र.कु. रीना द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित रहे पुष्पेन्द्र प्रताप सिंह, पूर्व जिलाध्यक्ष भा.ज.पा., ओमपाल सिंह भदौरिया, मुख्य नगरपालिका अधिकारी, छत्तरपुर, जयराम चतुर्वेदी, भा.ज.पा. नेता तथा अभिषेक खरे, वरिष्ठ अधिवक्ता। कार्यक्रम सम्पन्न महिला मोर्चा जिला अध्यक्षा द्रोपदी कुशवाहा के संयोजन में किया गया।



उदयपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर फ्री डेंटल चेकअप कैंप लगाया गया। जिसमें उपस्थित रहे डॉ. झरना, डॉ. अग्रवाल और उनकी टीम। साथ हैं ब्र.कु. रिता तथा ब्र.कु. नैना।



पानीपत-हरियाणा। विश्व भर में फैलती कोविड-19 की बीमारी को देखते हुए एक्सपॉर्टर एसोसिएशन, पानीपत ने ब्रह्माकुमारीज ज्ञान मानसरोवर को ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर की तीन मशीनें ऑस्ट्रेलिया से इम्पोर्ट कर कोविड-19 से सफर करने वाले पेशेंट्स की सेवार्थ 'दादी जानकी पॉजिटिव हेल्थ केयर सेंटर' में विधायक प्रमोद विज, राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण भाई तथा ब्र.कु. सोनिया को सौंपी।



सारनाथ-वाराणसी(उ.प्र.)। ज्ञान चर्चा के पश्चात जी.एम. ऑफ दैनिक जागरण अंकुर चड्ढा को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी। साथ हैं ब्र.कु. दीपेन्द्र तथा ब्र.कु. बिपिन।

आज की दुनिया का सबसे बड़ा जो एक सकारात्मक पहलू कहें वो ये है कि सभी सबकुछ बड़ा सहज रीति से कर रहे हैं, चाहे वो साइंस के साधनों द्वारा हो रहा है, लेकिन कर सभी रहे ही हैं। अब एक बात इससे बड़ी अच्छी समझ में आती है कि मन में जो भी अभी तक विचारों का एक सिलसिला चला, उन विचारों के सिलसिले से कुछ ऐसा बना जो बड़ा सुखदायी है। जैसे कोई भी आविष्कार है, किसी भी तरह की खोज है, ये सारा कुछ मन की ही तो उपज है। मन ने ही उसको उत्पन्न किया है। और मन में ही उसको अच्छी तरह से हमने सजाया है, संवारा है, और आज उसका एक तरह से प्रायोगिक रूप हम सबके सामने है और सभी उसका सुख ले रहे हैं। तो देखो कितना अच्छा है कि मन जिस चीज़ में रम जाता है, जिस चीज़ में खो जाता है, उसमें कुछ न कुछ वो बहुत गहरा प्राप्त कर लेता है। और उस गहरे प्राप्ति के अन्दर देखो कितना अच्छा राज है। जब वो प्राप्त करता है तो उससे अनेकों को सुख मिलता है। जैसे अभिनय की बात की गई है। देखो जैसे हम भी तो सारा दिन अभिनय ही

कर रहे हैं ना! और हरेक विचार जब हमारे सामने एक अभिनय के रूप में परिवर्तित होता है तो हमें भी सुख मिलता है और साथ में रहने वाले को भी सुख मिलता है। तो मन अगर सही रीति से अभिनय करे तो वो पूरे संसार को सुख दे सकता है। इस दुनिया के जो एक्टर-एक्ट्रेस हैं, जो अभिनेता, अभिनेत्री हैं वो अभिनय अवश्य करते हैं, लेकिन कईयों का अभिनय बहुत

मनीषी तपस्या कर रहे हैं। यहाँ जाने में बहुत अच्छा लगता है। मन खुश हो जाता है। इसका मतलब है कि हमारा अभिनय अगर सांसारिक रीति से है तो थोड़ा बहुत नापसंद हो सकता है। लेकिन अगर वो अलौकिक रीति वाला है तो वो सभी को पसंद आयेगा। तो परमात्मा भी हमको

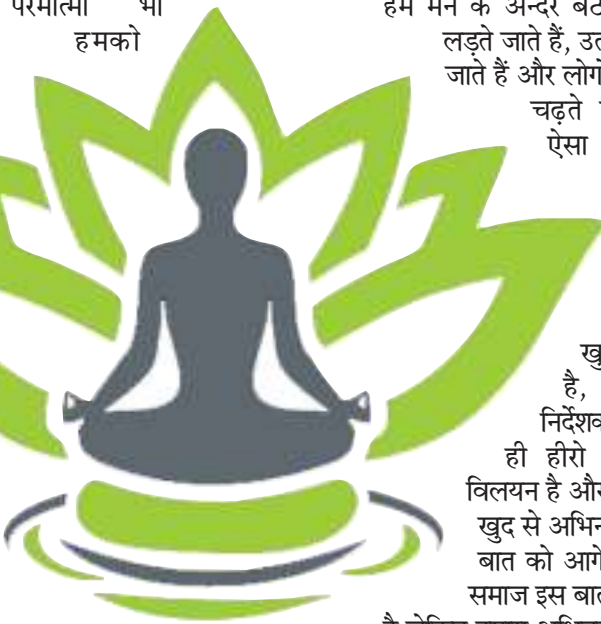
वाले की दिल भी खुश होती है। ऐसे ही हम सभी योगी आत्मायें हैं जितना हम अपने मन को जीतते जाते हैं, मन पर विजय प्राप्त करते जाते हैं, मन के साथ वो सारी चीज़ें कर रहे होते हैं जो मन के लिए जरूरी भी है और उसको उससे हटाना भी है। तो जितना हम मन के अन्दर बैठे विलयन से लड़ते जाते हैं, उतना साफ होते जाते हैं और लोगों के दिलों पर चढ़ते जाते हैं। तो ऐसा अभिनय जो खुद का खुद के ही साथ है। खुद ही डायरेक्शन है, खुद ही निर्माता है, खुद ही निर्देशक है, और खुद ही हीरो है, खुद ही विलयन है और हम खुद ही खुद से अभिनय करके उस बात को आगे बढ़ा रहे हैं। समाज इस बात को समझता है लेकिन हमारा अभिनय पूरा होने के बाद। दुनिया की फिल्म तो साढ़े तीन घंटे की है। लेकिन हमारी फिल्म 80 साल की हो सकती है, 70 साल की हो सकती है, 60 साल की हो सकती है, 50 साल की हो सकती है। लेकिन 50 सालों में हमने जो बहुत अच्छा अभिनय किया होता है, मन को जीता होता है उस साल के अभिनय को

पुरस्कृत किया जाता है। यानी लोग उसको सराहते हैं कि आपने इतना बड़ा परिवर्तन कर लिया! तो ये परिवर्तन कहाँ से आ रहा है? जैसे ही हम अपने अभिनय को देखते हैं, परखते हैं, और उसके अन्दर परिवर्तन करते जाते हैं तो खुद से जैसे ही अपना योग लगता है, खुद से जैसे ही अपना जुड़ाव होता है, खुद को जैसे मनन चिंतन करके साफ करते हैं, खुद में जो कमियाँ हैं उसको काटते जाते हैं तो बाहर सभी लोग हमको चाल से, चलन से, व्यवहार से पसंद करने लग जाते हैं। और यही पसंद, यही व्यवहार, यही स्थिति, लोगों को बहुत अच्छी लगती है। और कहते हैं कि वाह! निश्चित रूप से इस आत्मा ने बहुत मेहनत की है। तो हम सभी अब अपने मन के ऊपर, मनोयोग को पूरी तरह से अपने साथ जोड़कर कर्म करें और अपने मन में उठने वाले विकारों को शांत कर, उन विलयन को हराकर एक बहुत अच्छा हीरो बन कर अभिनय करें, तो उससे सभी को अनुभूति अच्छी होगी। और योग की ये सबसे सहज और सरल प्रक्रिया है। तो इसमें हम अपने मन के विकारों को जीतते हैं और दूसरों को सुखदायी बनाते चले जाते हैं।



ब.कु. अनुज, दिल्ली

मन का अभिनित रूप- योग



अच्छा लगता है, और कईयों का अभिनय अच्छा नहीं लगता। लेकिन आप देखो ऋषि मुनि तपस्वी तपस्या रूपी अभिनय करते हैं, तपस्या करते हैं वो प्रैक्टिकल में, लेकिन वो एक तरह से मन के साथ ही तो खेल रहे हैं ना! लेकिन वो अभिनय हमको बहुत आकर्षित करता है। उसमें कोई भी भिन्नता नहीं होती। सब लोग उनको स्वीकार करते हैं। सभी लोग कहते हैं कि देखो ऋषि

वो ही बात योग के माध्यम से बताना चाहते हैं कि योग एक बहुत ही सहज और सरल प्रक्रिया है। इसमें हम सब खुद ही हीरो हैं, खुद ही हीरो अपने अन्दर बैठे विलयन से लड़ता है। और फिर वो जीत पाता है। जितना-जितना वो जीत पाता जाता है, उतना वो खुश होता जाता है। और जितना वो खुश होता है उसके आधार से हम सामने

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दें



प्रश्न : मेरा नाम कनु है। मुझे लोगों के सामने शुरू से ही बोलने में बहुत ही हेजिटेशन होती है। मुझे अपने कॉलेज में प्रेजेंटेशन भी देना है। मैं अवॉयड भी नहीं कर पा रही हूँ, कृपया बतायें मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : कईयों की ऐसी शाय नेचर होती है जो दूसरों के सामने बोल नहीं पाते। मैं जो प्रैक्टिस कराता हूँ वही आपको करनी है। सवरे उठकर सात बार याद करें, अभी से ही शुरू कर दें मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। और जब प्रेजेंटेशन देने जायें तो तब भी ये संकल्प करेंगे। और ये संकल्प भी अपने मन में रख लें कि मेरा प्रेजेंटेशन बहुत अच्छा होगा। मैं निर्भिकता से वहाँ जाऊँगी। मेरी हर चीज़ को बहुत लाइक करेंगे। अभी से ये संकल्प करेंगे तो आपके वायब्रेशन क्रियेट हो जायेंगे। और आपको कोई कठिनाई नहीं होगी। लेकिन आपको अपनी इस नेचर को समाप्त करने के लिए स्वमान की प्रैक्टिस भी बहुत बढ़ानी चाहिए। 5-7 स्वमान को ले लें। शिव बाबा मेरे साथ हैं, शिव बाबा आ जाओ। आपमें निर्भयता भी आ जायेगी और बुद्धि भी खुल जायेगी। और जो हेजिटेशन है वो भी समाप्त हो जायेगी।

प्रश्न : ज्ञान में आने से पहले जब किसी का झूठा ख्याल था तो कहा जाता था कि जिसका झूठा ख्याल उसके जैसा बन जाएगा, लेकिन हमें पता नहीं था तब कि यह मज़ाक के लिए कहा जाता है या ऐसा सच में भी होता है। परन्तु ज्ञान में आने के बाद निमित्त टीवर से पता चला था कि झूठा ख्याल से हिसाब-किताब बनते हैं। तो किसी का झूठा ख्याल से या किसी को झूठा खिलाने से यह हिसाब-किताब कैसे बनते हैं और किस तरह से बनते हैं? कृपया बतायें?

उत्तर : झूठा खाना ये भी एक अपवित्रता है। जो शुद्ध नहीं माना जाता है। बाबा ने ब्राह्मणों के लिए जो नियम और मर्यादाएं बताई हैं, ये उसके विपरित है। किसी को अपना झूठा खिलाना या किसी का झूठा खाना माना किसी आत्मा के लगाव-झुकाव में, आकर्षण में फंसना, अपना कर्म बंधन बनाना, अपने में किसी को फंसाना तो ये है बहुत बड़ी अपवित्रता, जो हमें परमात्मा से दूर आत्माओं की आकर्षण में फंसा देती है। जिससे हमें दूर रहना है। सच्चा ब्राह्मण वही जो हर कदम श्रीमत प्रमाण चले। जो सिर्फ एक बाप को अपना संसार बनाये, जिसके सर्व सम्बन्ध

एक बाप से हों। बुद्धि बाबा की याद में जुटी रहे, किसी आत्मा में नहीं। वरना अंत काल में भी बाप के बजाय वही आत्मा याद आएगी, तो फिर गति क्या होगी, तो हमें भोजन खाना है तो एक बाबा के साथ ही बाबा को भोग लगाकर, शुद्धता के साथ भोजन को स्वीकार करना है, एक बाप की ही स्मृति में रहकर करना है।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य



प्रश्न : मैं चार साल से ज्ञान में हूँ। मैं कोशिश करती हूँ कि लौकिक माँ और छोटी बहन की बातों को सहन कर पाऊँ, मैं घर का काम करती हूँ फिर भी वो लोग कहते रहते हैं कि मैं कुछ नहीं करती हूँ। कृपया बतायें कि ऐसे में मैं क्या करूँ?

उत्तर : अगर आपको लगता है कि आप अपना कर्म अच्छे से कर रहे हैं तो आप बाबा को साथ में रख कर, उन बातों में न जा कर कि कौन क्या सोच रहा है, निस्वार्थ भाव से अपना कर्म कीजिए। आज नहीं तो कल उनको भी लगेगा कि आप अपना कर्म अच्छे से करते हैं। अगर हम किसी को दिखाने के लिए, जताने के लिए कोई कार्य करते हैं तो कहीं ना कहीं सामने वाले हमसे संतुष्ट नहीं होते हैं। यहाँ यह एक कमी है संतुष्टता की। अगर आप संतुष्ट होंगे तो आपसे निकलने वाले वायब्रेशन्स ऑटोमेटिकली दूसरों को संतुष्ट करेंगे। आप उनके बारे में गलत मत सोचिए। आप अपनी कोशिश करते रहिए तो फिर ऐसा नहीं होगा। पर इन सब में थोड़ा समय लगता है, एक दम से ऐसा नहीं होता है। आप कुछ समय यह करके देखिये और फिर अपना अनुभव हमारे साथ शेयर कीजिए।

प्रश्न : मैं पूछना चाहती हूँ कि अगर स्वभाव-संस्कार वश कोई आत्मा गलत शब्द बोले और हमें सुनने में

अच्छा न लगे तो हमें क्या करना चाहिए? अगर उस समय दूसरी आत्मा को चुप कराने के लिए हम ऊंची आवाज़ में बात करें तो क्या यह गलत है?

उत्तर : अगर सामने वाली आत्मा आपसे उग्र में बड़ी है या आपकी हमजिन्स है, तो उन्हें आप सही समय आने पर गाइड करें। अगर सामने वाली आत्मा आप से छोटी है, जैसे अगर कोई बच्चा है, तो उन्हें आप प्यार से गाइड करें।

बाबा हमें दैवीगुण धारण करने के लिए बार-बार समझानी देते हैं। हमें एक बात का विशेष ध्यान रखना है कि किसी को कोई बात समझाने के लिए ये जरूरी नहीं कि हम भी वही संस्कार धारण करें, जो सामने वाले ने धारण किया है। सामने वाले में अगर क्रोध का संस्कार है तो उस समय हमें क्रोध में नहीं आना है, धैर्यता धारण करें, उस समय शांति बनाये रखें। अगर आप उसी समय उन्हें समझाना चाहेंगे तो सामने वाली आत्मा समझ भी नहीं पाएगी और आपको गलत ही समझेगी। इसलिए उस समय शांत रहें और जब दूसरी आत्मा शांत हो जाए फिर उनसे बात करें। तब आपकी बात वह समझ पायेगी। आशा है कि आपको प्रश्न का उत्तर मिल गया होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पौस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल





ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

मातेश्वरी – विश्व में एक अनोखा व्यक्तित्व

गया? योग की शक्ति सर्वश्रेष्ठ है। योगबल से ही विजय प्राप्त होती है। विजयमाला का मणका बनता है। तो यह हमने मम्मा की ज़िन्दगी में प्रैक्टिकल देखा।

पुरुषार्थ का अर्थ

आज भी बाबा हमसे बार-बार कहते हैं, “बच्चे, आपके योग की अवस्था ऐसी हो जिससे मनसा सेवा कर सको। अन्त में ऐसी ही सेवा होगी, लोग बहुत घबराये हुए, दुःखी, अशान्त होंगे। आप दृष्टि देकर उनको शान्ति की शक्ति देना। मम्मा के जीवन में तो इन सब प्यारी अवस्थाओं को हमने देखा है। बाबा ने मम्मा को कोई बात बार-बार नहीं कही। यही मम्मा की विशेषता थी कि बाबा ने जब कोई एक शिक्षा दी, दुबारा कहने की ज़रूरत बाबा को नहीं रही। जी हाँ, कहके मम्मा ने उसको अपने जीवन में लाया। इसको कहते हैं, पुरुषार्थ। मम्मा खुद मुरली सुनाती थी। अपनी वाणी चलाती थीं तो कहती थीं कि जब आप कहते हो कि मैं पुरुषार्थी हूँ, तो आप यह पुरुषार्थी शब्द किस भाव से कहते हो, किस प्रसंग में कहते हो, “भाई, मैं अभी पुरुषार्थी हूँ ना!” गोया आप ‘पुरुषार्थी’ शब्द का भाव यह लेते हो कि पुरुषार्थी माना जिसमें कमियाँ हों, कमजोरियाँ हों, गलती व भूल करता रहता हो। यह पुरुषार्थी का मतलब नहीं है। पुरुषार्थी सच्चे अर्थ में उसको कहा जाता है जिसको एक बार कोई बात समझाने के बाद फिर दुबारा समझाने की ज़रूरत न रहे। यह है सच्चा पुरुषार्थ, ऐसा पुरुषार्थ करना है। यह हमने प्रैक्टिकल उनके जीवन में देखा। बाबा ने जो शिक्षा दी, उसे उन्होंने उसी तरह से पालन किया और आचरण में लाया।

दृढ़ निश्चय कैसे ?

मम्मा का निश्चय बहुत दृढ़ और अटूट था। निश्चय के भी कई प्रकार होते हैं। हर एक का निश्चय एक जैसा नहीं होता। कई मानते हैं कि शिव बाबा आ गये हैं, दुनिया बहुत खराब हो चुकी है...यह वह... सारी बातों में निश्चय होगा लेकिन इस दुनिया का विनाश हो जायेगा, यह कैसे होगा, उन्हें समझ में नहीं आता। कल्प की आयु पाँच हजार वर्ष है, तो कई लोग कह देते हैं कि इन बातों में अभी तक हमारा निश्चय नहीं है। वे क्लास में रोज़ आते हैं, मुरली रोज़ सुनते हैं, हम

पितामह हैं। पिता अगर बच्चे को गोद में लेता है तो क्या ग़लत करता है? कमाल है आप यह प्रश्न करते हैं! क्या यह प्रश्न शोभता है? आप भी बाप हैं आपने कभी अपने बच्चों को गोद में नहीं लिया है?” ऐसे मम्मा ने कड़केदार जवाब दिया। कोई संकोच नहीं किया, कोई लज्जा नहीं की। क्यों? क्योंकि उनको मालूम था कि बाबा का मन कितना निर्मल है, कितना शुद्ध है और उनकी गोद तो स्वर्ग से भी बढ़कर है। जो उनकी गोद में जाता है वह ईश्वरीय वर्से का हक़दार हो जाता



बाबा के बच्चे हैं, यह भी कहते हैं लेकिन शत-प्रतिशत निश्चय हो जिसको सम्पूर्ण निश्चय कहा जाता है – उनमें वह नहीं होता है। एक है सम्पूर्ण निश्चय, दूसरा है दृढ़ निश्चय। मम्मा कभी अपने उस निश्चय से हिली नहीं।

अटल निश्चय कैसे ?

एक बार मम्मा को कोर्ट जाना पड़ा। एक छोटी-सी कन्या, इतने बड़े-बड़े लोग वहाँ बैठे थे। उनके सामने मम्मा से कोर्ट में यह प्रश्न पूछा गया कि दादा लेखराज सबको गोद में क्यों लेते हैं? तो मम्मा ने कहा, “वो हमारे

हैं। तो यह निश्चय उनका अटल रहा। अपने निश्चय से वे कभी टली नहीं। कई बार कई लोग जान बचाने के लिए कुछ इधर-उधर की बात कह देते हैं। वे कहते हैं कि बाद की बात बाद में देखी जायेगी, अभी फिलहाल हम मुश्किल में पड़े हुए हैं, तो अभी ऐसा कह दो, वैसा कह दो। लेकिन मम्मा में ऐसा नहीं था। तो दृढ़ निश्चय, सम्पूर्ण निश्चय, अटल निश्चय और शक्ति से भरपूर निश्चय मम्मा का था। हरेक अपने-अपने निश्चय को देखें, क्या उसमें यह सारी बातें हैं? कभी मम्मा के जीवन में कोई ऐसी बात नहीं आई जो उनका निश्चय थोड़ा

डांवाडोल हुआ हो।

समस्त मानवजाति की माँ

कई लोगों के मन में यह प्रश्न उठता होगा कि मम्मा को ही बाबा ने क्यों आगे रखा, क्यों चुना? एक बात तो निश्चय की थी और दूसरी थी पवित्रता की। पवित्रता नाम सिर्फ ब्रह्मचर्य का नहीं है, पवित्रता अर्थात् मन, वचन, कर्म की पवित्रता। विकारों को परास्त करना, उन पर विजय प्राप्त करना – यह पवित्रता है। जो निषेधात्मक या बुरे संकल्प हैं वह भी ना आये। अरे! मम्मा का मन इतना निर्मल था, इतना शुद्ध था कि जो कोई उनके सामने गया वह नतमस्तक हो गया! माँ, माँ शब्द उनके मुख से निकला, चाहे वह 70 साल का हो, चाहे 80 साल का हो, चाहे वह 20 साल का युवा ही हो। उनको देखते ही सबके मुख से निकलता था यह ‘माँ’ है, ‘यह मेरी माँ’ है।

मम्मा से मिलने कई शहरों से देवियों के कई पुजारी आते थे। समाचार पत्रों के बड़े पत्रकार आते थे, प्रसिद्ध लेखक आते थे जिनकी पुस्तकें बहुत चलती थीं, प्रचलित थीं। मम्मा से मिलने जब आये, तो वे दंडवत् हो गये। घुटने के बल, टाँगों के बल लेट गये। छोटे बच्चों की तरह माँ, माँ कहते रहे। आँखों से आँसू बहते रहे। क्या बात थी, क्या जादू था! यह हमने अपनी आँखों से देखा कि मम्मा का कितना प्रभाव था! उनके व्यक्तित्व का कितना प्रभाव था! उनके जो मानसिक प्रकम्पन थे उनका लोगों पर कितना प्रभाव पड़ता था! मम्मा को देखकर उनको लगता था कि यह संस्था अच्छी है, इन लोगों की धारणाएँ अच्छी हैं। जैसे बाबा कहते कि आप बच्चे बाबा के शो-केस के शो-पीस हो, तो मम्मा एक सैम्पल थी।



मियामी-फ्लोरिडा (यू.एस.ए.)। ब्रह्माकुमारी द्वारा अर्थ डे पर आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में ‘क्रिएटिंग अ क्लाइमेट फॉर चेंज’ विषय पर चर्चा करते हुए ब्र.कु. मेरेडिथ, केट फ्लेमिंग, फाउंडर एंड एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर ऑफ द ब्रिज इनिशिएटिव, एमजे अलगरा, फाउंडर एंड एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर क्लीन दिस बीच अप, जेन थायर प्रोग्राम मैनेजर फॉर ए.आई.आर.आई.ई. तथा ब्र.कु. वहु।



भोपाल-रोहित नगर (म.प्र.)। होली पर्व पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. रीना तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



लीमा-पेरू (साउथ अफ्रीका)। ‘द इंटरनैशनल जियस कार्डसिल ऑफ पेरू रिलिजियस फॉर पीस’ के आध्यात्मिक और धार्मिक नेता, जिनमें से ब्रह्माकुमारी पेरू भी एक हिस्सा है ने पैडेमिक कारणों को लेकर, पर्यावरणीय मुद्दों, महिलाओं के खिलाफ आवाज़ को मिटाने के लिए कार्रवाई, प्रवासियों और शरणार्थियों के प्रति प्रतिबद्धता, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई, स्वतंत्रता और धार्मिक विविधता पर एक सार्वजनिक नीति की दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता को देखते हुए, इन सब बातों को लेकर गणतंत्र के राष्ट्रपति फ्रांसिस्को सगस्ती से मुलाकात की।



दंगला-असम। नवनिर्मित राजयोग ट्रेनिंग सेंटर के उद्घाटन व सम्मान समारोह का आयोजन उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. शीला दीदी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम के पूर्व रैली निकालते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें और कार्यक्रम में उपस्थित रहे दिलीप बोरो, एम.सी.एल.ए. तथा ब्र.कु. मिनाक्षी।

‘मेरा परिवार शक्ति का सुरक्षा चक्र’ पर वेबिनार

युवा दया, त्याग, प्रेम जैसे गुणों को धारण कर समाज सेवा में आगे आएं : अर्पित शर्मा



भीनमाल-राज. | ब्रह्माकुमारीज द्वारा वेबिनार के युवा प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर ‘यूथ फॉर ग्लोबल पीस प्रोजेक्ट’ के अंतर्गत ‘मेरा परिवार शक्ति का सुरक्षा चक्र’ विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के शुभारम्भ में ब्र.कु. प्रहलाद, ग्वालियर ने सभी का स्वागत अभिनन्दन किया। तत्पश्चात ब्र.कु. गीता दीदी, भीनमाल, राज. राष्ट्रीय सदस्या, युवा प्रभाग ने कार्यक्रम का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा कि युवा अपने परिवार को

चाहिए। तभी परिवार में सुख, शांति व प्रसन्नता का निवास होता है। राजयोगिनी ब्र.कु. शैलजा दीदी, छतरपुर ने कहा कि परिवार ही वह कड़ी है जो बच्चों को, युवा को संस्कार की पहली रूपरेखा सिखाती है। अर्पित शर्मा, प्रदेश समन्वयक, भारतीय छात्र संसद ने कहा कि यदि युवा परिस्थितियों, वस्तुओं व घटनाओं को देखने का नज़रिया बदलकर स्वयं के जीवन में दया, त्याग, प्रेम, अपनत्व, सहयोग की भावना आदि गुणों को धारण करता है तो वह अपने परिवार के लिए ही नहीं वरन् सम्पूर्ण समाज के लिए सुखदाई बन जायेगा। ब्र.कु. रेखा दीदी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सबकुछ जीतकर या हारकर इंसान जहाँ जाना चाहता है वह परिवार ही तो है। परिवार एक ऐसा आधार है जो मानव को मानव बनाता है। जो इंसानियत सीखाता है साथ ही उसको अन्य से भिन्न करता है। ब्र.कु. अर्चना दीदी भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहीं। ब्र.कु. नीलम ने सभी को राजयोग मेडिटेशन द्वारा गहन शांति की अनुभूति कराई। कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्र.कु. सुनीता दीदी ने किया। कार्यक्रम लगभग 250 भाई-बहनों ने भाग लिया।

मदर्स डे पर...

चिल्ड्रेन्स पर्सनैलिटी डेवलपमेंट वेबिनार



बाल्को-कोरवा(छ.ग.) | ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित ‘चिल्ड्रेन्स पर्सनैलिटी डेवलपमेंट’ ई-क्लास में मोटिवेशनल स्पीकर व लाइफ कोच शालिनी चंद्रन ने बच्चों संग ‘मदर्स डे’ के उपलक्ष्य पर ‘अंडरस्टैंडिंग फेमिनिन एनर्जी’ विषय पर चर्चा की। अपने वक्तव्य के दौरान उन्होंने बताया कि इस सृष्टि में दो तरह की ऊर्जा कार्य करती है एक होती है मेल एनर्जी, दूसरी फीमेल एनर्जी। यह दोनों ही एनर्जी प्रत्येक में विद्यमान होती हैं। जब हम बड़े होते जाते हैं तो जेंडर कॉन्शियस होने की वजह से हम जेंडर अनुसार एनर्जी का इस्तेमाल करने लग जाते हैं और हमारा

व्यक्तित्व वैसा रिफ्लेक्ट होने लगता है। फिर आगे राजयोग मेडिटेशन के संदर्भ में बताते हुए कहा कि मेडिटेशन से हमारे अन्दर की दोनों ही शक्तियों को एक्टिवेट किया जा सकता है। मेडिटेशन से त्रिकालदर्शी, दूरदर्शी की स्टेज प्राप्त होती है। जिससे आप अतीत के अनुभवों के आधार पर वर्तमान में आई समस्या का अच्छे भविष्य के लिए समाधान कर सकते हैं। और मदर्स डे के उपलक्ष्य पर बच्चों को ये भी सिखाया कि हमें माँ का सम्मान करना चाहिए। उन्हें वैसे ही एक्सेप्ट करना चाहिए जैसी वो हैं। उनको किसी से भी कम्पेयर न करें। ब्र.कु. विद्या दीदी ने भी अपने विचार रखे।

स्ट्रेस फ्री लिविंग पर वेबिनार...

बाह्य स्थिति को कंट्रोल करने के बजाय भीतर की स्थिति को करें कंट्रोल

नई दिल्ली | ब्रह्माकुमारीज द्वारा वेबिनार के आयोजन में ब्र.कु. प्रियंका ने ये भी शेयर करते हुए कहा कि हमारा माइंड बाह्य वातावरण पर निर्भर न होकर बल्कि हमारे अंदर क्या हो रहा है उस पर होना चाहिए। हमें अपने माइंड व अपने आस-पास के लोगों का ध्यान रखना हमारी नैतिक ज़िम्मेवारी है, जिससे हमें

चयन करने की ज़रूरत है और उस पॉजिटिव एनर्जी को चारों ओर फैलाना है। ब्र.कु. प्रियंका ने ये भी शेयर करते हुए कहा कि हमारा माइंड बाह्य वातावरण पर निर्भर न होकर बल्कि हमारे अंदर क्या हो रहा है उस पर होना चाहिए। हमें अपने माइंड व अपने आस-पास के लोगों का ध्यान रखना हमारी नैतिक ज़िम्मेवारी है, जिससे हमें



विद्यार्थियों में बढ़ते स्ट्रेस लेवल को ध्यान में रखते हुए इस विषय पर फोकस किया है कि इसको कैसे मैनेज किया जाये। स्ट्रेस के विरुद्ध हमारा एक श्रेष्ठ विचार सबसे बड़ा हथियार है। हम में कितने ऐसे हैं जो अपने कार्य को लेकर और पर्सनल लाइफ में स्ट्रगल तो कर ही रहे हैं लेकिन डिप्रेशन में भी हैं। कई तरह की समस्याओं व स्ट्रेस पर योजनाबद्ध तरीके से हम विजय पा सकते हैं। अभी हमें अपने माइंड को कंट्रोल करने के लिए हेल्दी व पॉजिटिव थॉट्स के

दुआयें मिलेंगी। यह जीवन को जीने लायक बनाता है और हर परिस्थिति से लड़ने की ताकत देता है। उन्होंने सलाह देते हुए कहा कि हमें अपने जीवन को ऊपर उठाने के लिए सुबह एक घंटा स्पीरिचुअल स्टडी के लिए देना चाहिए, जिससे हम अपने आपको पॉजिटिव एनर्जी से भर सकें। उन्होंने इस बात पर भी जोर देते हुए कहा कि अपने माइंड को रिलेक्स करने व लाइफ को हेल्दी बनाने के लिए सुबह-सुबह मेडिटेशन के लिए समय ज़रूर निकालें।

शिक्षित बेटी पूरे परिवार को बनाती सशक्त

मंदसौर-म.प्र. | ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रशिक्षिका ब्र.कु. समिता ने कहा कि आज की महिला अबला नहीं है, सबला है। वह घर का कार्य करने से लेकर चंद्रमा तक की ऊंचाइयाँ छूने में सक्षम है, हमें उन्हें किसी भी रूप में कमजोर नहीं मानना

लायंस क्लब मंदसौर गोल्ड द्वारा शासकीय ‘जनरल नर्सिंग एवं मिडफायरी ट्रेनिंग सेंटर’ में कार्यरत नर्सिंग स्टाफ एवं शासकीय सेवा में रत महिला कर्मियों का किया सम्मान।

उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत किया। प्राचार्या बसंती मसीह ने सभी अतिथियों का फूलों के गुलदस्ते से अभिनंदन किया। इस अवसर पर उपस्थित रहे लायंस क्लब के लायन विजय पलोड, लायन संदीप जैन, लायन साक्षी जैन, लायन सुदीप दास,



चाहिए। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. के.एल. राठौर ने सभी महिलाओं को और मजबूत होने का संकल्प दिलाते हुए कहा कि समाज की मुख्य धारा में अपने आप को स्थापित करना

चाहिए। लायंस गोल्ड के रीजनल चेयरमैन लायन सुरेश सोमानी ने जी.एन.एम.टी. सेंटर में शिक्षार्थी सभी प्रशिक्षु महिला कर्मियों, स्टाफ का अभिनंदन किया। लायंस क्लब गोल्ड के अध्यक्ष दिनेश बाबानी ने

कार्यक्रम संयोजक लायन डॉ. आशीष अग्रवाल, लायन संजय पारीक, लायन मनोज सेवानी। कार्यक्रम का संचालन लायन डॉ. आशीष अग्रवाल, सुश्री अलीमा रंगरेज, सुश्री साक्षी ने किया।